Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

अल्लाह तआला का आदेश

وَ لِلّٰهِ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَ مَا فِی الۡاَرۡضِ ؕ یَغۡفِرُ لِمَنۡ یَّشَآءُ وَ یُعَذِّبُ مَنۡ یَّشَآءُ ؕ وَ اللّٰهُ غَفُوۡرٌ رَّحِیۡمٌ

(सूरत आले-इम्रान आयत :130)

अनुवाद: और अल्लाह ही का है जो आकाशों और ज़मीन में है वह जिसे चाहता है क्षमा कर देता है और जिसे चाहता है आज़ाब देता है और अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला और बार बार रहम करने वाला है।

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُهٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِهِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِهِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰهُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّةٌ

वर्ष 5

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly BADAR Qadian HINDI

अंक 27

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

मूल्य 500 रुपए वार्षिक

10 ज़विल क़अदह 1441 हिजरी कमरी 2 वफा 1399 हिजरी शमसी 2 जुलाई 2020 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल;ल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दोलिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण अपना फ़जल नाज़िल करे। आमीन

इस्तिक़ामत बड़ी चीज़ है। प्रत्येक चीज़ जब अपने ठाक स्थान और अवसर पर हो वह हिक्मत और इस्तिक़ामत से ताबीर पाती है।

मैं चाहता हूँ कि आप इस्तिक़ामत को प्राप्त करने के लिए कोशिश करें और चेष्ठा से उसे पाएं क्योंकि वह इन्सान को ऐसी हालत पर पहुंचा देती है जहां उस की दुआ क़बूलीयत का सम्मान प्राप्त करती है।

उपदेश सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

दृढ़ता ही इन्सान का इस्मे आज़म (प्रथम साधन) है

मैं यह भी बतला देना चाहता हूं किा इस्तिक़ामत जिस पर मैंने ज़िक्र छेड़ा था वही है जिसको सूफ़ी लोग अपनी परिभाषा में फ़ना कहते हैं और اِهۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِیۡمَ के अर्थ भी फ़ना ही के करते हैं। अर्थात रूह, जोश और इरादे सब के सब अल्लाह तआला के लिए ही हो जाएं और अपनी भावनाएं और नफ़सानी इच्छाएं बिलकुल मर जाएं। कुछ इन्सान जो अल्लाह तआला की इच्छा और इरादे को अपने इरादों और जोशों पर मुक़द्दम नहीं करते वे प्राय दुनिया ही के जोशों और इरादों की असफलताओं में इस दुनिया से उठ जाते हैं। हमारे भाई साहिब स्वर्गीय मिर्ज़ा ग़ुलाम क़ादिर को मुकदमों में बड़ी मस्रूफ़ियत रहती थी और उनमें वह यहां तक फना और लीन रहते थे कि आख़िर इन असफलताओं ने उनकी सेहत पर प्रभाव डाला और वह देहान्त कर गए। और भी बहुत से लोग देखे हैं जो अपने इरादों को ख़ुदा पर मुक़द्दम करते हैं। अन्त में इस नफ्स को प्राथिमकता देने में में भी वह कामयाब नहीं होते और बजाय लाभ के नुक़्सान उठाते हैं। इस्लाम पर ग़ौर करोगे तो मालूम होगा कि नाकामी सिर्फ़ झूठे होने के कारण से आती है। जब ख़ुदा तआला की तरफ़ से नर्मी कम हो जाती है तो अल्लाह तआला का क़हर नाज़िल होता है जो इस को नाअभिप्राय और असफल बना देता है। विशेषत: उन लोगों को जो बसीरत रखते हैं जब वह दुनिया के उद्देश्यों की तरफ़ अपने समस्त जोश और इरादे के साथ झुक जाते हैं तो अल्लाह तआला उन को असफल कर देता है लेकिन नेकों को वे पवित्र उसूल सम्मुख रहता है जो एहसास मौत का उसूल है। वह ख़्याल करता है कि जिस तरह माँ बाप का देहान्त हो गया है या जिस तरह पर और कोई बुज़ुर्ग ख़ानदान फ़ौत हो गया है इसी तरह पर मुझ को एक दिन मरना है और कई बार अपनी उम्र का ख़याल करके कि बुढ़ापा आ गया और मौत के दिन क़रीब हैं ख़ुदा तआला की तरफ़ रुजू करता है। कुछ ख़ानदान ऐसे होते हैं कि उनमें उमरें प्राय एक ख़ास संख्या तक जैसे 50 या 60 तक पहुंचती हैं। बटाला में मियां साहिब का जो ख़ानदान है इस की उमरें भी प्राय इसी हद तक पहुँचती हैं। इस तरह पर अपने ख़ानदान की उम्रों का अंदाज़ा और लिहाज़ भी इन्सान को मौत का एहसास की तरफ़ ले जाता है।

अत: यह बात ख़ूब याद रखनी चाहिए कि आख़िर एक न एक दिन दुनिया और इस के आनन्दों को छोड़ना है तो फिर क्यों (न) इन्सान उस वक़्त से पहले ही इन आन्नदों के नाजायज़ प्राप्त करने के तरीकों को छोड़ दे। मौत ने बड़े बड़े सच्चों और मक़बूलों को नहीं छोड़ा और वह नौजवानों या बड़े से बड़े दौलतमंद और बुज़ुर्ग की परवाह नहीं करती। फिर तुम को क्यों छोड़ने लगी। अत: दुनिया और इस के आनन्दों को ज़िन्दगी के समस्त साधन से समझो और ख़ुदा तआला की इबादत का माध्यम। सादी ने इस विषय को इस तरह अदा किया है

ख़ूर दन बराए ज़ीस्तन व ज़िक्र करदन अस्त
तू मुअतक़िद कि ज़ीस्तन अज़ बहर ख़ूर दन अस्त

यह न समझो कि ख़ुदा हमसे अपने आप ख़ुश हो जाएगी और हम मज़ें में रहें मगर ऐसे अँधों को अगर ख़ुदा की तरफ़ से ही परवाना आ जाए तो वे इन लज़्ज़तों को जो जिस्मानी इच्छाओं और इरादों के अनुकरण में समझते हैं न छोड़ेंगे और उनको इस लज़्ज़त पर जो एक मोमिन को ख़ुदा में मिलती है प्राथिमकता देंगे। ख़ुदा तआला का परवाना मौजूद है जिस का नाम क़ुरआन शरीफ़ है जो जन्नत और स्थायी आराम का वादा देता है मगर उस की नेअमतों के वादा पर कुछ लिहाज़ नहीं किया जाता। और अस्थायी और काल्पिनक ख़ुशियों और राहतों की तलाश मैं किस क़दर तकलीफ़ें ग़ाफ़िल इन्सान उठाता और सख़्तियां सहन करता है मगर ख़ुदा तआला की राह में ज़रा सी मुश्किल को देखकर भी घबरा उठता और सुधारणा शुरू कर देता है। काश वह इन फ़ानी लज़्ज़तों के मुक़ाबला में इन स्थायी और मुस्तक़िल ख़ुशियों का अंदाज़ा कर सकता है। इन मुश्किलों और तकलीफ़ों पर विजय पाने के लिए एक कामिल और भूल न करने वाला नुस्ख़ा मौजूद है जो करोड़ों सच्चों का तजुर्बा किया हुआ है। वह क्या है? वह वही नुस्ख़ा है जिसको नमाज़ कहते हैं।

नमाज़ क्या है? एक किस्म की दुआ है जो इन्सान को समस्त बुराईयों और अश्लीलता से महफ़ूज़ रखकर नेकियों का अधिकारी और अल्लाह के इनामों का पात्र बना देती है। कहा गया है कि अल्लाह इस्मे आज़म (सब से बड़ा नाम) है। अल्लाह तआला ने समस्त विशेषताओं को इस के अधीन रखा है। अब ज़रा ध्यान दो। नमाज़ का आरम्भ अज़ान से शुरू होता है। अज़ान अल्लाहो अकबर से शुरू होती है। अर्थात अल्लाह के नाम से शुरू हो कर ला इलाहा इल्लल्लाह अर्थात अल्लाह पर ही पर ख़त्म होती है। यह गर्व इस्लामी इबादत ही को है कि इस में प्रथम और अन्त में अल्लाह तआला ही लक्ष्य है न कुछ और। मैं दावा से कहता हूँ कि इस किस्म की इबादत किसी क़ौम और जाति में नहीं है। अत:

शेष पृष्ठ 12 पर

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अल्ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ का यूरोप का सफर, सितम्बर अक्तूबर 2019 ई (भाग-10)

वाकफ़ीन नौ की हुज़ूर अनवर सय्यदना अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ के साथ मुलाक़ात

SAINT PRIX के मेयर और वाइस प्रैज़ीडैंट फ्रैंच मुस्लिम कौंसल (यूनीयन की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ से मुलाक़ात)

फ़ैमिली मुलाक़ातें, निकाह के ऐलान, ग़ैर अज़ जमाअत सम्मान्नीय मेहमानों की हुज़ूर अनवर से मुलाक़ात

(रिपोर्ट: अब्दुल माजिद ताहिर, एडिशनल वकीलुत्तबशीर लंदन)

(अनुवादक: शेख मुजाहिद अहमद शास्त्री)

7 अक्तूबर 2019 ई (दिनांक सोमवार)बाक़ी रिपोर्ट

वाकफ़ीन नौ के सवालों के जवाब

इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने वाकफ़ीन नौ बच्चों को सवाल करने की आज्ञा प्रदान फ़रमाई

एक वाक़िफ़ नौ बच्चे ने सवाल किया कि हुज़ूर को अगर ख़लीफ़ा बनने का अवसर न मिलता तो हुज़ूर क्या बनते? इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया मैं पहले भी धर्म की सेवा कर रहा था, वैसे भी जमाअत की सेवा करता रहता। बाक़ी में किसी अवसर की तलाश में नहीं था और न कोई हो सकता है

एक वाक़िफ़ नौ बच्चे ने सवाल किया कि हुज़ूर को फ्रांस का जलसा कैसा लगा?इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया यह तो जलसा नहीं, छोटी सी जलसी थी। वहां अभी यू के में ख़ुद्दामुल अहमिदया का इज्तिमा हुआ है, उनकी हाज़िरी लगभग 6000 थी और तुम्हारे पूरे जलसा की हाज़िरी 2700 /2800 थी

एक वाक़िफ़ नौ बच्चे ने सवाल किया कि क्या मुसलमान माताओं के क़दमों में जन्नत होती है तो क्या ग़ैर मुसलमान माताओं के क़दमों में जन्नत नहीं होती?इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया:हर माँ जो अपने बच्चे की अच्छी तर्बीयत करती है, इस को नेक बनाती है तो ज़ाहिर है वह नेकियां करेगा और जन्नत में जाएगा। पहली बात तो यह है कि माओं की सेवा करनी चाहिए। दूसरी बात यह है कि जो माताएं नेक हैं वे अपने बच्चों को नेक बनाती हैं, धर्म भी सिखाती हैं, अल्लाह तआला की इबादत करना सिखाती हैं और उनको अच्छे अख़लाक़ भी सिखाती हैं ठीक है। अल्लाह तआला उनको अधिक पसन्द करता है। बाक़ी तुम्हें यह कहा गया है कि अपनी माँ की सेवा करो,कहना मानो, और इस में माताओं से कहा गया है कि अपने बच्चों की नेक तर्बीयत करो बाक़ी अल्लाह तआला ने जन्नत में लेकर जाना है। अल्लाह तआला बेहतर जानता है कि किस को लेकर जाता लेकिन आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जो माताएं अपने बच्चों की नेक तर्बीयत करें , उनको अल्लाह तआला का भी पता लग जाए और इस की इबादत करने वाले हों और मख़लूक़ की सेवा करने वाले हों और उनका हक़ अदा करने वाले भी हों उनके बारे में यह है कि वह जन्नत में जाने वाले होंगे। लेकिन इन्सान मुसलमान हो या ग़ैर मुस्लिम अच्छा इन्सान वही है जो अपने माँ बाप की इज़्ज़त करता है, सम्मान करता है, जो सही बातें मानता है। अल्लाह तआला ने क़ुरआन शरीफ़ में भी यही कहा है उनकी बातें मानो और उनकी सेवा करो लेकिन अगर वो कहें कि अल्लाह के मुक़ाबला में शरीक न बनाओ तो फिर उनकी बात माननी है।

एक वाक़िफ़ नौ ने सवाल किया कि आपने कितने देशों के भ्रमण किए हैं? इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया काफ़ी देश भ्रमण किए हैं। रिपोर्टें पढ़ कर गिनती कर लेना। मैंने 35 या 36 देश भ्रमण किए होंगे।

एक वाक़िफ़ नौ ने सवाल किया कि हुज़ूर अभी मैं 15 साल का हूँ अगले साल मैं जामिया जा सकता हूँ या नहीं?हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: जामिया जाने से उम्र का सवाल नहीं है। जामिया जाने के लिए सैकण्डरी स्कूल पढ़ना ज़रूरी होता है। अगर तुम ने सैकण्डरी स्कूल पास कर लिया है और जामिया के interview पास कर लेते हो और वह कहते हैं ठीक है, हम तुम्हें ले लेंगे तुम्हारी शिक्षा के अनुसार भी और तुम्हारे धार्मिक इलम के अनुसार भी। उनका टैस्ट देकर फिर चले जाओगे।15-16 - 17 साल का सवाल नहीं है,15 -16 साल से लेकर18 साल की उम्र तक जामिया जाते हैं। लेकिन सैकण्डरी स्कूल पास करना पड़ता है।

एक वाक़िफ़ नौ बच्चे ने सवाल किया कि आपको गोश्त कौन सा पसन्द है? इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया मुझे गोश्त कोई अधिक पसन्द नहीं है।

इसी वाक़िफ़ नौ बच्चे ने निवेदन किया कि हुज़ूर अनवर को fish पसन्द है? इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया fish पसन्द है। बाक़ी जानवरों के गोश्त खा कर दाँत ही ख़राब हो जाते हैं। जो अधिक गोश्त खाते हैं उनके दाँत ख़राब हो जाते हैं इसलिए balance ख़ुराक खानी चाहिए। इसलिए सब्ज़ी भी खानी चाहिए , दालें भी खानी चाहिऐं, गोश्त भी खाना चाहिए, गोश्त खाने के लिए अधिक नख़रे न किया करो।

एक वाक़िफ़ नौ बच्चे ने सवाल किया कि आपके Bodyguard कैसे बनते हैं? इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया उनसे पूछें। मेरा विचार है जो कुछ नहीं करते वे Bodyguard बन जाते हैं। तुम पढ़ाई करो और किसी योग्य बनो। तुम डाक्टर बनो या टीचर बनो।

वाक़िफ़ नौ बच्चे ने निवेदन किया कि मैंने मुरब्बी साहिब बनना है। इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया मुरब्बी बनना, साहिब न बनना। अगर तुम साहिब बन गए तो फिर काम से गए। मुरब्बी सिर्फ़ मुरब्बी रहे तो बड़ा अच्छा रहता है। जहां वह साहिब बन गया तो समझो कि वह हमारे काम से गया।

एक वाक़िफ़ नौ बच्चे ने निवेदन किया कि हुज़ूर अनवर को स्पोर्टस में क्या पसंद है? इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया अब तो मैं खेलता नहीं लेकिन बचपन में मैं क्रिकेट भी खेलता रहा हूँ,badminton भी खेलता रहा हूँ

वाकफ़ीन नौ बच्चों की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ के साथ यह क्लास सवा आठ बजे तक जारी रही। इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ अपने दफ़्तर तशरीफ़ ले आए।

SAINT PRIX के मेयर की अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़बे-नस्त्रेहिल अज़ीज़ से मुलाक़ात

क्षेत्र SAINT PRIX (जहां हमारा मर्कज़ी मिशन हाऊस दारुस्सलाम और मस्जिद मुबारक है के मेयर Jean-Pierre Enjalbert हुज़ूर अनवर अय्य-दहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ से मुलाक़ात को लिए आए हुए थे। एक समय यह मेयर जमाअत का सख़्त मुख़ालिफ़ था। उसने जमाअत का मौजूदा मिशन हाऊस बन्द कर दिया था और यह इल्ज़ाम लगा कर सील कर दिया था कि इस

शेष पृष्ठ 9 पर

ख़ुत्बः जुमअः

समय के ख़लीफ़ा से मुहब्बत सिर्फ़ ख़ुदा तआला ही पैदा कर सकता है और ख़ुदा तआला के लिए ही हो सकती है सिर्फ निज़ाम का जारी होना ही कोई हक़ीक़त नहीं रखता जब तक समय के ख़लीफ़ा और जमाअत के लोगों के बीच इख़लास तथा वफ़ा और इरादत प्रेम का सम्बन्ध ना हो और यह सम्बन्ध अल्लाह तआला ही पैदा कर सकता है।

जो जमाअत को ख़िलाफ़त से सम्बन्ध है और समय के ख़लीफ़ा को जमाअत से है यह अल्लाह तआला की सहायता तथा समर्थन का सबूत है

जमाअत के लोगों का इरादत तथा प्रेम और इख़लास व वफ़ा का सम्बन्ध ख़िलाफ़त से और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से बढ़ता ही चला जा रहा है और क्यों ना हो यह आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पेशगोइयों अनुसार है।

जमाअत में नेकी की आवाज़ पर लब्बैक कहने का जो माद्दा है यह सच्चाई की असल रूह है और यह सच्चाई की रूह कभी कोई झूठा दुनिया में नहीं बना सकता। ख़िलाफ़त से इख़लास का सम्बन्ध और जो मुहब्बत है वह वर्णन योग्य नहीं है

दुनिया-भर में बसने वाले विभिन्न क़ौमीयतों और रंग तथा नस्ल के जमाअत के लोगों की ख़ुलफ़ाए अहमदियत से केवल अल्लाह तआला के लिए अक़ीदत तथा मुहब्बत की भावनाओं का ईमान वर्धक वर्णन।

27 मई, ख़िलाफ़त विदस से एम टी ए के एक नए बाबरकत दौर में दाख़िल होने का ऐलान, दुनिया के विभिन्न क्षेत्रों की दृष्टि से आठ चैनलों पर आधारित एक नया क्रम के साथ एम टी ए की का आरम्भ।

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 29 मई 2020 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ۔
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ
رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ۔ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔
اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ
وَلَا الضَّآلِّيْنَ

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने एक अवसर पर फ़रमाया कि "मैं ख़ुदा तआला का शुक्र करता हूँ कि उसने मुझे एक मुख़लिस और वफ़ादार जमाअत प्रदान की है। मैं देखता हूँ कि जिस काम और मक़सद के लिए मैं उनको बुलाता हूँ बहुत तेज़ी और जोश के साथ एक दूसरे से पहले अपनी हिम्मत और तौफ़ीक़ के अनुसार आगे बढ़ते हैं और मैं देखता हूँ कि उनमें एक सिदक़ और इख़लास पाया जाता है। "

(मल्फ़ूज़ात भाग 1 पृष्ठ 336)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से इस सिदक़ व इख़लास और मुहब्बत के सम्बन्ध के नज़ारे तो हमने देखे। सहाबा और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बेशुमार घटनाएं हैं। पुराने अहमदी ख़ानदानों में इस सम्बन्ध की रवायतें भी चल रही हैं और हमारे लिट्रेचर में ख़ुलफ़ा के ख़ुत्बों में, ख़िताबों में भी इस का ज़िक्र मिलता है लेकिन यह सम्बन्ध जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से था और उन ख़ानदानों में चला आ रहा है और नए शामिल होने वालों को भी है और होना चाहिए वह सम्बन्ध वहीं तक ही सीमित नहीं बल्कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से अल्लाह तआला के वादा के अनुसार उस की निचली कड़ी से भी इतना ही मज़बूत सम्बन्ध है और यही सम्बन्ध है जो जमाअत की इकाई और एकता की निशानी और ज़मानत है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने जब अल्लाह तआला से सूचना पाने के बाद अपने इस दुनिया से विदा होने की ख़बर जमाअत को दी तो साथ ही जमाअत की तसल्ली के लिए अल्लाह तआला से सूचना पा कर जमाअत में ख़िलाफ़त के सिलसिला के जारी होने की ख़ुशख़बरी भी दी। अत: आप अलैहिस्सलाम ने रिसाला अलवसीयत में यह फ़रमाया कि

"तुम मेरी इस बात से जो मैंने तुम्हारे पास वर्णन की दुखी मत हो और तुम्हारे दिल परेशान न हो जाएं क्योंकि तुम्हारे लिए दूसरी क़ुदरत का भी देखना ज़रूरी है और इस का आना तुम्हारे लिए बेहतर है क्योंकि वह स्थायी है जिसका सिलसिला क़यामत तक विच्छेद नहीं होगा। और वह दूसरी क़ुदरत नहीं आ सकती जब तक मैं न जाऊं लेकिन मैं जब जाऊँगा तो फिर ख़ुदा उस दूसरी क़ुदरत को तुम्हारे लिए भेज देगा जो हमेशा तुम्हारे साथ रहेगी जैसा कि ख़ुदा का बराहीन अहमदिया मैं वादा है और वह वादा मेरी ज़ात के बारे में नहीं है बल्कि तुम्हारे बारे में वादा है जैसा कि ख़ुदा फ़रमाता है कि मैं इस जमाअत को जो तेरे अनुयायी हैं क़ियामत तक दूसरों पर ग़लबा दूँगा।"

(रिसाला अलवसीयत, रुहानी ख़ज़ायन भाग 20 पृष्ठ 305-306)

अत: अल्लाह तआला के इस वादा के अनुसार आप के देहान्त के बाद ख़िलाफ़त का निज़ाम जारी हुआ और सिर्फ निज़ाम का जारी होना ही कोई हक़ीक़त नहीं रखता जब तक समय के ख़लीफ़ा और जमाअत के लोगों के बीच इख़लास तथा वफ़ा और इरादत प्रेम का सम्बन्ध न हो और यह सम्बन्ध अल्लाह तआला ही पैदा कर सकता है। कोई इन्सान या इन्सानी कोशिश इस सम्बन्ध को न पैदा कर सकती है न क़ायम रख सकती है और जमाअत की इकाई और एकता और तरक़्क़ी की ज़मानत यही सम्बन्ध है और यही अल्लाह तआला के वादा के पूरा होने और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के साथ अल्लाह तआला की सहायता तथा समर्थन और सिलसिला अहमदिया के सच्चे होने की दलील है। ख़िलाफ़त के साथ जमाअत के लोगों का जो सम्बन्ध है जिसमें पुराने अहमदी भी शामिल हैं और नए आने वाले भी, नौजवान भी और बच्चे भी, मर्द भी और औरतें भी, दूर दराज़ रहने वाले अहमदी भी जिन्होंने कभी समय के ख़लीफ़ा को देखा भी नहीं है सब शामिल हैं लेकिन ये सब लोग जो हैं इख़लास तथा वफ़ा में बढ़े हुए हैं और बढ़ने की कोशिश करते हैं। समय के ख़लीफ़ा का पैग़ाम पहुंचे तो इस पर अनुकरण करने की कोशिश करते हैं। मुहब्बत और सम्बन्ध का इज़हार इस तरह करते हैं कि हैरत होती है और ये सब बातें अल्लाह तआला के वादा के पूरा होने की क्रियात्मक गवाहियां हैं और जमाअत की तरक़्क़ी भी इस सम्बन्ध से जुड़ी है। जैसा कि मैंने कहा जो जमाअत को ख़िलाफ़त से सम्बन्ध है और समय के ख़लीफ़ा को जमाअत से है ये अल्लाह तआला की सहायता तथा समर्थन का सबूत है और ये सिर्फ़ बातें नहीं हैं बल्कि हज़ारों लाखों ऐसे घटनाएं हैं जहां जमाअत के लोगों इस बात का इज़हार करते हैं। अगर इन घटनाओं को जमा किया जाए तो बेशुमार वृहद जिल्दें उस की बन जाएँगी।

बहरहाल इस समय में कुछ घटनाएं , भावनाएं और एहसासात का ज़िक्र करूँगा जो जमाअत को समय के ख़लीफ़ा से हर ज़माना में रहे और अब तक हैं। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के देहान्त के बाद से शुरू हुए जो आज 112 साल सम्पूर्ण होने के बाद भी इसी तरह स्थापित हैं। मुख़ालिफ़ीन तो समझते थे कि हज़रत

मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के देहान्त के बाद यह सिलसिला ख़त्म हो जाएगा लेकिन जमाअत के लोगों का इरादत तथा प्रेम और इख़लास व वफ़ा का सम्बन्ध ख़िलाफ़त से और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम से बढ़ता ही चला जा रहा है और क्यों न हो यह आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पेशगोइयों के अनुसार है। बहरहाल अब मैं कुछ घटनाएं प्रस्तुत करता हूँ और हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल रज़ि से मैं शुरू करता हूँ। एक दो घटनाएं पहले वर्णन करूँगा।

सम्पादक साहिब अलबदर हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल-अव्वल रज़ी अल्लाह तआला अन्हो की बीमारी के दिनों के बारे में लिखते हैं। इन दिनों में ख़ुद्दाम के पत्र इयादत के बहुत अधिक आ रहे हैं और उन ख़तों पर हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल-अव्वल रज़ि ने फ़रमाया में इन सब के लिए दुआ करता हूँ जो इयादत का ख़त लिखते हैं। सम्पादक साहिब लिखते हैं कि उश्शाक अजीब तरीकों में अपनी मुहब्बत का इज़हार कर रहे हैं। उनमें से कुछ पत्रों का उद्धरण बतौर नमूना दर्ज करता हूँ

हकीम मुहम्मद हुसैन साहिब क़ुरैशी लिखते हैं मैंने तो एक दिन अल्लाह तआला के हुज़ूर में अर्ज़ की थी कि हे मौला हज़रत नूह की ज़िन्दगी की ज़रूरतें तो एक स्थान के लिए विशेष थीं और अब तो ज़रूरतें जो पेश हैं उनको बस तू ही जानता है। हमारी दुआ क़बूल कर और हमारे इमाम को नूह जैसी उम्र प्रदान कर

फिर भाई मुहम्मद हसन साहिब पंजाबी मद्रास से लिखते हैं कि हज़रत साहिब की सेहत ठीक होने की ख़बर पढ़ कर मुझे इतनी ख़ुशी हुई जिसका अंदाज़ा मेरा मौला करीम और रहीम ख़ुदा ही जानता है

(उद्धरित अलबदर , दिनांक 16 फरवरी 1911 ई पृष्ठ 2 भाग 10 संख्या16)

फिर सम्पादक साहिब लिखते हैं "मुहब्बत अजीब चीज़ है। हमारे दोस्त मियां मुहम्मद बख़श साहिब जो आस्ट्रेलिया में व्यापार करते हैं अपने एक ख़त में लिखते हैं कि आप कादियान की अख़बार के अन्तर्गत हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अय्यदहुल्लाह के बारे में जो शीर्षक लिखते हैं इस में सिर्फ ख़लीफ़तुल मसीह के शब्द न हों बल्कि शीर्षक में ही आपकी सेहत तथा तन्दरुस्ती के बारे कोई शब्द इशारा करता हो क्योंकि बदर को खोलने के वक़्त सबसे अव्वल जिन शब्दों को हमारी तलाश करने वाली निगाहें तलाश करने को दौड़ती हैं वह इसी शीर्षक के शब्द हैं और हमारा जी चाहता है कि ख़ुद इस शीर्षक में ऐसे शब्द हों जो अंदरूनी इबारत पढ़ने से पहले ही हमारे दिलों को राहत पहुंचाने वाले हो जाएं। अत: हम अपने प्रिय दोस्त के इस इख़लास को सम्पादक साहिब लिखते हैं "अपने अज़ीज़ दोस्त के इख़लास को इज़्ज़त की निगाह से देखते हैं। उनकी इच्छा के अनुसार इस बार शीर्षक बनाते हैं।"

(अलबदर , दिनांक 6 अप्रैल1911 ई पृष्ठ 1भाग 10 संख्या22-23)

फिर हज़रत अबू अब्दुल्लाह साहिब जो खेवह बाजवा के थे। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के सहाबी थे। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल रज़ि की सोहबत में बैठे हुए थे और उन्होंने एक दिन निवेदन किया कि मुझे कोई नसीहत इरशाद फ़रमाएं। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल रज़ि ने फ़रमाया कि मैं नहीं समझता कोई चीज़ करने की हो और आप कर न चुके हूँ। उन्होंने फ़रमाया मौलवी साहब मैं नहीं समझता कोई चीज़ करने की हो और आप कर ना चुके हूँ। अब तो हिफ़्ज़ क़ुरआन ही बाक़ी है। अत: हज़रत ख़लीफ़तुल-मसीह अव्वल रज़ि की बात सुनकर लगभग पैंसठ साल की उम्र में उन्होंने क़ुरआन करीम हिफ़्ज़ करना शुरू किया और बावजूद इतनी उम्र होने के हाफ़िज़ क़ुरआन हो गए।

(उद्धरित दैनिक अलफ़ज़ल 8 दिसम्बर 2010 ई पृष्ठ 4 बहवाला अलफ़ज़ल कादियान 19 अप्रैल 1947 ई)

यह था कि किसी तरह मैं ख़लीफ़तुल-मसीह का हुक्म बजा लाऊँ। उस पर अनुकरण करूँ।

हज़रत ख़लीफ़तुल-मसीह अस्सानी रज़ि के ज़माना में जब शुद्धि ने ज़ोर पकड़ा । यह 1923 ी में मलकाना के इलाक़े में शुरू हुआ था। यह हालत देखकर हज़रत मुसल्लेह मौऊद रज़ी अल्लाह तआला अन्हो का दिल बेक़रार हुआ। और आप रज़ि ने इसी साल,9 मार्च को ख़ुत्बा जुमा में अहमदियों को अपने ख़र्च पर इन इलाक़ों में जाने और दावत इलल्लाह के द्वारा इन लौट जाने वालों को वापस लाने का मन्सूबा जमाअत के सामने रखा। इस तहरीक पर जमाअत ने वालहाना लब्बैक कहा। उच्च शिक्षा प्राप्त सरकारी नौकरी करने वाले, टीचर्ज़, व्यापारी अत: कि हर वर्ग से फ़िदाई इन इलाक़ों में दावत इलल्लाह अल्लाह करते रहे और उनकी कोशिश के नतीजा मैं हज़ारों रूहें एक-बार फिर ख़ुदाए वाहिद का कलिमा पढ़ने लगीं। एक आयु वाले बुज़ुर्ग क़ारी नईमुद्दीन साहिब बंगाली ने एक दिन जब हुज़ूर मज्लिस में तशरीफ़ रखते थे आज्ञा लेकर निवेदन किया कि यद्यपि मेरे बेटे मौलवी ज़ुलुर्रहमान और मतीउर्रहान छात्र बी ए क्लास ने मुझ से कहा नहीं मगर मैं ने अंदाज़ा किया है कि हुज़ूर ने जो कल राजपूताना में जा कर दावत इलल्लाह करने के लिए वक़्फ़ ज़िन्दगी की तहरीक की है और जिन हालात में वहां रहने की शर्तें पेश की हैं शायद उनके दिल में हो कि अगर वे हुज़ूर की ख़िदमत में अपने आपको पेश करेंगे तो मुझे जो उनका बूढ़ा बाप हूँ कोई तकलीफ़ होगी लेकिन मैं हुज़ूर के सामने ख़ुदा तआला को गवाह कर के कहता हूँ कि मुझे उनके जाने और तकलीफ़ उठाने में ज़रा भी ग़म या दुख नहीं है। मैं साफ़ साफ़ कहता हूँ कि अगर ये दोनों ख़ुदा की राह में काम करते हुए मारे भी जाएं तो इस पर में एक भी आँसू नहीं गिराऊंगा बल्कि ख़ुदा तआला का शुक्र अदा करूँगा। फिर यही दोनों नहीं मेरा तीसरा बेटा महबूबुर्हामान भी अगर धर्म की ख़िदमत करता हुआ मारा जाए और अगर मेरे दस बेटे और हूँ और वे भी मारे जाएं तो भी मैं कोई ग़म नहीं करूँगा। इस पर हुज़ूर ने भी और जमाअत के लोगों ने जज़ाकल्लाह कहा।

(उद्धरित अज़ अलफ़ज़ल15 मार्च1923 ई पृष्ठ11)

1924 ई में जब हज़रत ख़लीफ़तुल-मसीह अस्सानी रज़ि यूरोप के सफ़र पर तशरीफ़ लाए थे। वह अस्थायी जुदाई जो थी उसने भी जमाअत के लोगों को बेचैन कर दिया हुआ था। इस एक रिवायत से इस का अंदाज़ा होता है। बाबू सिराजुद्दीन साहिब स्टेशन मास्टर लिखते हैं कि

"मेरे आक़ा हम दूर हैं, मजबूर हैं। अगर मुम्किन होता तो हुज़ूर के क़दमों की धूल बन जाते ताकि जुदाई के सदमे न सहते। आक़ा मैं चार साल से दारुल अमान नहीं गया था मगर दिल को तसल्ली थी कि जब चाहूँगा हुज़ूर की क़दम-बोसी कर लूँगा लेकिन अब एक एक दिन मुश्किल हो रहा है। अल्लाह पाक हुज़ूर को ख़ैरियत के साथ, मुज़फ़्फ़र तता मंसूर जल्दी वापस लाए।"

(सवानिह फ़ज़ल उम्र भाग 5 पृष्ठ 475)

यह मुहब्बत किस की पैदा की हुई है? हज़रत ख़लीफ़तुल-मसीह अस्सानी रज़ि फ़रमाते हैं कि

" एक नौजवान ने पिछले साल मेरी तहरीक को सुना। वह ज़िला सरगोधा का निवासी था। वह नौजवान बग़ैर पासपोर्ट के ही अफ़ग़ानिस्तान जा पहुंचा।" उन्होंने कहा समय के ख़लीफ़ा का इरशाद है। एक सम्बन्ध है और इस को पूरा करना ज़रूरी है। तहरीक तब्लीग़ की थी। सुना तो अफ़ग़ानिस्तान पहुंच गया "और तब्लीग़ शुरू कर दी।" पासपोर्ट भी पास नहीं था। "हुकूमत ने उसे गिरफ़्तार कर के जेल में डाल दिया तो वहां क़ैदियों और अफ़िसरों को तब्लीग़ करने लगा और वहां के अहमदियों से भी वहीं वाक़फ़ीयत आपस में पहुंचा ली और कुछ लोगों पर-असर डाल लिया। आख़िर अफ़िसरों ने रिपोर्ट की कि यह तो क़ैदख़ाना में भी असर पैदा कर रहा है। मुल्लाओं ने क़तल का फ़तवा दिया मगर वज़ीर ने कहा कि यह अंग्रेज़ी रियाया है उसे हम क़तल नहीं कर सकते। आख़िर हुकूमत ने अपनी हिफ़ाज़त में उसे हिन्दुस्तान पहुंचा दिया।" हज़रत ख़लीफ़ा सानी लिखते हैं "अब वह कई माह के बाद वापस आया है। इस की हिम्मत का यह हाल है कि मैंने उसे कहा कि तुमने ग़लती की। और बहुत देश थे जहां तुम जा सकते थे और वहां गिरफ़्तारी के बग़ैर तब्लीग़ कर सकते थे तो वह फ़ौरन बोल उठा कि अब आप कोई देश बता दें मैं वहां चला जाऊँगा। इस नौजवान की माता ज़िन्दा है लेकिन वह उस के लिए भी तैयार था कि बिना माता को मिले किसी दूसरे देश की तरफ़ रवाना हो जाए मगर मेरे कहने पर वह माता को मिलने जा रहा है।" हज़रत ख़लीफ़ा सानी रज़ि फ़रमाते हैं कि "अगर दूसरे नौजवान भी इस पंजाबी की तरह जो अफ़ग़ानिस्तान से आया है हिम्मत करें तो थोड़े ही समय में दुनिया की काया पलट सकती है।"

(तारीख़ अहमदियत भाग 8 पृष्ठ 44)

शाम के एक दोस्त मुहमद अश्शवा साहिब थे। जब हज़रत मुसल्लेह मौऊद रज़ी अल्लाह तआला अन्हो शाम तशरीफ़ ले गए थे तो उनको लबनान जाने का भी आपके साथ सौभाग्य प्राप्त हुआ था। बड़े अच्छे वकील थे और ख़िलाफ़त से एक ऐसा सम्बन्ध था कि जो बहुत मज़बूत था। वकील थे इस लिए चाहते थे कि हर बात दलील से की जाए लेकिन जब उन्हें यह कह दिया जाता था कि समय के ख़लीफ़ा की तरफ़ से यह कहा गया है तो कहते थे बस ख़त्म। जब यह हुक्म आ गया तो बात ख़त्म हो गई। अब यही फैसला है। तो यह सम्बन्ध था उन लोगों का।

(उद्धरित ख़ुत्बा जुमा दिनांक 23 अक्तूबर 2009 ई ख़ुतबात मसरूर भाग 7 पृष्ठ 503 – 504)

ख़िलाफ़त साल्सा का ज़माना आया तो अमरीका की सिस्टर नईमा लतीफ़ एक

अहमदी ख़ातून थीं। उनको "ख़िलाफ़त और समय के ख़लीफ़ा से इशक़ की हद तक प्यार था और समय के ख़लीफ़ा की इताअत को अव्वलीन प्राथिमकता देतीं। हज़रत ख़लीफ़तुल-मसीह सालिस के अमरीका के दौरे के दौरान एक यूनीवर्सिटी में पर्दे के महत्व पर हज़रत ख़लीफ़तुल-मसीह अल-सालिस का ख़िताब सुनकर उसी वक़्त हिजाब ले लिया और इस ज़माना में अपने इलाक़ा में अकेली औरत थीं जो इस्लामी पर्दे में नज़र आती थीं।"

(ख़ुतबात मसरूर भाग 12 पृष्ठ 605 ख़ुतबा जुमा 03 अक्तूबर 2014 ई)

तड़प थी कि समय के ख़लीफ़ा का हुक्म है। एक सम्बन्ध है और इस सम्बन्ध को निभाना है और मैं ने बैअत की है तो इस हुक्म को पूरा भी करना है

नज़ीर अहमद साहिब सांवल ज़िला ख़ानेवाल ने यह घटना सुनाई है कि एक मुख़लिस अहमदी अदरणीय महर मुख़तार अहमद साहिब आफ़ बागड़ सरगाना थे। उनकी घटना वर्णन करते हैं कि 1974 ी के हालात में मुख़ालिफ़ीन ने आपको बहुत तंग कर दिया था। आपके पुरजोश दाई इलल्लाह होने की वजह से बिरादरी ने भी सख़्त मुख़ालिफ़त की और सम्पूर्ण रूप से बाईकॉट किया। इस बात से आप पहले से ज़्यादा अपने ईमान में पुख़्ता हो गए और अपने जोनने वाले लोगों में वुसअत पैदा कर ली। मुख़ालिफ़ीन ने भी अपनी सरगर्मीयां तेज़ कर दें और शत्रुओं की कार्यवाहियां बढ़नी शुरू हो गईं। आपने बच्चों की शिक्षा के प्राप्त करने के लिए और पाकीज़ा माहौल में परवरिश देने के लिए अपना रकबा जो था इस खेती वाली ज़मीन को फ़रोख़त कर के रब्वह के माहौल में ठेके पर ज़मीन लेकर काशत शुरू कर दी। जब हज़रत ख़लीफ़तुल-मसीह अलसालस से मुलाक़ात की और बताया कि बागड़ सर गाना से जो गांव का नाम था, ज़मीन बेच कर के रब्वह के क़रीब मैंने ठेके पर ज़मीन ले ली है और फ़सल लगा ली है तो हज़ूर ने उसे पसन्द नहीं फ़रमाया कि इलाक़े को ख़ाली नहीं छोड़ना था। इस पर आपने फ़ौरन तामील की। मालिक रकबा से ठेके की रक़म वापिस मांगी । इस के इन्कार पर आप खड़ी फ़सल और ठेके की रक़म लिए बग़ैर वापिस अपने वतन बागड़ सर गाना आ गए और कोशिश कर के अपनी बेची हुई ज़मीन दुबारा ख़रीदी। महंगे दामों ख़रीदी और फिर हज़रत ख़लीफ़तुल-मसीह अलसालस की ख़िदमत में हाज़िर हो कर निवेदन किया कि आपके इरशाद का पालन कर लिया है। हुज़ूर रहेमहुल्लाह तआला ने भी उस पर प्रसन्नता का इज़हार फ़रमाया और महर साहिब भी इस बात पर बड़े ख़ुश थे।

(उद्धरित दैनिक अलफ़ज़ल 10 मई 2010 ई पृष्ठ 5)

हज़रत ख़लीफ़तुल-मसीह अलसालस ने एक बार अपने एक ख़ुत्बे में बयान फ़रमाया कि मैं 1970 ई में अफ़्रीक़ा के दौरे पर गया। वहां एक जगह हमारे मुब-ल्लिग़ ने ऐसा प्रोग्राम बनाया था जो मेरे लिए बड़ा तकलीफ़ वाला था क्योंकि सौ मील के लगभग दूरी तय कर के मैं एक जगह ऐसे वक़्त पहुंचा कि मैं जमाअत से हाथ नहीं मिला सकता था। इस लिए तकलीफ़ वाला नहीं था कि सौ मील का सफ़र था। इस लिए तकलीफ़ वाला था कि प्रोग्राम इतना संक्षिप्त था कि वहां की जमाअत से हाथ नहीं मिला सकता था क्योंकि वहां एक सम्बोधन देना था जिसमें ग़ैर मुल्क के ईसाई भी आए हुए थे। फ़रमाते हैं कि मैंने सम्बोधन दिया, सवाल जवाब होते रहे इस में बहुत देर हो गई और जब बहुत वक़्त गुज़र चुका तो हमारे मुबल्लिग़ ने ऐलान किया कि हाथ मिलाना नहीं होंगे। हुज़ूर फ़रमाते हैं कि और वे लोग जिनकी सारी उम्र में पहली बार जमाअत अहमदिया के ख़लीफ़ा से मुलाक़ात हुई थी ,उनके पास गया था और उनको पता नहीं था फिर कब उनको मौक़ा मिले वे इस ऐलान के बावजूद हाथ मिलाने के लिए टूट पड़े। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल-सालिस फ़रमाते हैं कि स्थानीय अहमदी दोस्तों ने मेरे प्राईवेट सैक्रेटरी और दूसरे साथियों को इतने धक्के दिए कि उनको पता ही नहीं लगा कि वे कहाँ गए और हाथ मिलाना शुरू कर दिया। फ़रमाते हैं कि ठीक है हाथ मिलाना तो शुरू हो गया लेकिन हाथ मिलाना साधारण मुसाफ़ा नहीं था। हर शख़्स मेरा हाथ पकड़ता था और फिर छोड़ता ही नहीं था। मेरा मुँह देखता था और मेरा हाथ छोड़ता ही नहीं था। और साथ वाला इंतिज़ार करता रहता था और आख़िर तंग आकर, यह घटना बीसियों हाथ मिलाने में में हुआ कि अगला आने वाला एक हाथ से इस का बाज़ू पकड़ता था और दूसरे हाथ से मेरा बाज़ू पकड़ के झटका देकर छुड़ाता था और फिर ख़ुद हाथ मिलाने लग जाता था और वह भी हाथ नहीं छोड़ता था। फिर अगले आदमी को भी यही करना पड़ता था। बहरहाल हुज़ूर फ़रमाते हैं कि बड़ी मुश्किल से हम वहां से निकले। फ़रमाते हैं ग़ैरों को बताने के लिए कि अपनों को तो मैं नहीं कह रहा ।उनको तो ख़िलाफ़त का और जमाअत के लोगों का जो सम्बन्ध है इस का पता है। लोगों को बता दूं कि मैं इतना बेफकूप नहीं कि मैं यह समझने लग जाऊं कि मेरी किसी ख़ूबी के नतीजा में पाँच छ: हज़ार मील दूर मेरी इस किस्म की मुहब्बत इन लोगों के दिलों में पैदा हो गई कि जिन्होंने मुझे कभी देखा न मेरे हालात ही ज़्यादा-तर जानते थे। वो लोग भी इस तरह टूट टूट कर हाथ मिलाने के लिए आगे आ रहे थे। यह मुहब्बत अल्लाह तआला की पैदा की हुई है।

(उद्धरित ख़ुतबात नासिर भाग 6 पृष्ठ 547 से 548 ख़ुतबा 22 अक्तूबर 1976 ई)

हज़रत ख़लीफ़तुल-मसीह अलराबे रहमहुल्लाह तआला का ज़माना आता है। आप कहते हैं कि

"अफ़्रीक़ा में जो महान तब्दीलियां पैदा हुई हैं यह पुराने वाकफ़ीन की क़ुर्बानियों से पैदा हुई हैं। जो हैरत-अंगेज़ तब्दीलियां आज वहां नज़र आ रही हैं वह ऐसी महान हैं कि उनकी कल्पना वहां की जमाअतें भी नहीं कर सकती थीं कितनी हैरत-अंगेज़ देश के अन्दर तब्दीली पैदा हो चुकी है। कुछ अहमदी बड़े बड़े अनुभव वाले और अपने देशों की हुकूमतों में प्रभाव रखने वाले उन्होंने मुझे बताया कि ख़ुद हमें भी इलम नहीं था कि हमारी क़ौम अहमदियत से मुहब्बत और सहयोग में इतना आगे बढ़ चुकी है और इतना ज़्यादा वह इस वक़्त तैयार है कि उसे पैग़ाम पहुंचाया जाए। अत: आप फ़रमाते हैं "साहिब"हैं उनका नाम लेना उचित नहीं। उनके देश का नाम भी ज़ाहिर करना मुनासिब नहीं। उन्होंने कहा कि मुझे तो कुछ समझ नहीं आ रही यह हो क्या रहा है कि मेरी कल्पना में भी नहीं था कि हमारी क़ौम को किसी जमाअत अहमदिया के ख़लीफ़ा की ऐसी ख़िदमत की तौफ़ीक़ मिलेगी और ऐसे मुहब्बत के इज़हार का अवसर मिलेगा। मेरे कल्पना में भी यह बात नहीं थी। उन्होंने कहा कि जो कुछ मैंने देखा है यहां हुकूमत के सरबराहों के साथ तो होता देखा है।" और वह भी दुनियावी नज़र से होता है। "इस के सिवा किसी और के साथ ऐसा सुलूक नहीं देखा और यह भी उन्होंने बताया कि इस में हमारी जमाअत की कोशिशों का दख़ल नहीं है जो कुछ हो रहा है ग़ैब से हो रहा है और हैरत-अंगेज़ तरीक़ा पर हो रहा है।"

(उद्धरित ख़ुत्बात ताहिर भाग 7 पृष्ठ 134-135)

तो यह सारा कुछ अल्लाह तआला की तरफ़ से पैदा किया हुआ है। फिर हज़रत ख़लीफ़तुल-मसीह अल राबे पाकिस्तान के बारे में एक अवसर पर ज़िक्र करते हुए फ़रमाते हैं, कुछ बुराईयों की निशानदेही की थी कि

"पाकिस्तान में भी कुछ ख़राबियां जैसे वीडियो कैसेट के ग़लत इस्तिमाल के बारे में शुरू हुईं। " आप फ़रमाते हैं कि "मैंने एक ख़ुत्बे में ऐलान किया था कि कुछ गंदी रस्में स्थान बना रही हैं इस से क़ौमी अख़लाक़ तबाह हो जाऐंगे और घरों के अमन उठ जाऐंगे और मियां बीवी के वफ़ा के सिलसिले टूट जाऐंगे और उनके सम्बन्धों में दूरियां पड़ जाऐंगे, दराड़ें पड़ जाएँगी। हरगिज़ इस रुझान को पनपने ना दें। अत: मुझे पाकिस्तान से जो पत्र मिले उनसे मेरा दिल" हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अलराबे फ़रमाते हैं "पाकिस्तान से जो पत्र मिले हैं उनसे मेरा दिल ख़ुदा के हुज़ूर सज्दा करने वाला हुआ और बार-बार हुआ कि वे लोग जो कुछ बुराइयों में पड़े थे उन्होंने साफ़ लिखा कि हम इन ग़लत कामों में पड़ गए थे। अल्लाह का एहसान है कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की जमाअत से जुड़ें हैं और सीधा जब आपकी आवाज़ हम तक पहुंची है तो ये सारे झूठे बुत तोड़ कर हमने अपने दिलों से बाहर फेंक दिए। तो जमाअत में" आप फ़रमाते हैं "जमाअत में नेकी की आवाज़ पर लब्बैक कहने का जो माद्दा है यह सदाक़त की असल रूह है और यह सदाक़त की रूह कभी कोई झूठा दुनिया में नहीं बना सकता।"

(ख़ुतबात ताहिर भाग 11 पृष्ठ 920)

फिर अब मेरे वक़्त की बातें हैं। 2004 ई में मैं ने नाईजीरिया का दौरा किया। दो दिन का दौरा था। पहले प्रोग्राम नहीं था। संयोग से और मजबूरी से बन गया क्योंकि फ़्लाईट वहां से मिलती थी लेकिन वहां जा के यह एहसास हुआ कि यहां आना बड़ा ज़रूरी था। न आते तो बड़ा ग़लत होता। कुछ समय पहले नाईजीरिया जमाअत का जलसा हो चुका था और लोग बड़ी संख्या में इस जलसे में वहां शामिल भी हो चुके थे। यह ख़्याल नहीं था कि मेरे वहां जाने पर दूर दूर से लोग आ सकेंगे लेकिन सिर्फ दो घंटे के लिए वे मुझे मिलने के लिए आए। वहां लोग आए और तक़रीबन तीस हज़ार के क़रीब मर्द तथा औरतें जमा हो गईं और उनके जो इख़लास तथा वफ़ा के नज़ारे थे जो हमने देखे वह भी देखने योग्य थे।

ख़िलाफ़त से इख़लास का सम्बन्ध और जो मुहब्बत है वह नाक़ाबिल बयान है। इन लोगों ने जिन्होंने कभी समय के ख़लीफ़ा को देखा भी नहीं सीधा जब देखा तो ऐसा इज़हार किया कि हैरत होती थी। वापसी के वक़्त दुआ में कुछ औरतें और लोग इतने भावुक थे और इस तरह तड़प रहे थे कि हैरत होती थी और यह मुहब्बत सिर्फ़ ख़ुदा तआला ही पैदा कर सकता है और ख़ुदा तआला की लिए ही हो सकती है।

मौलवी कहते हैं कि हमने अफ़्रीक़ा के अमुक देश में जमाअत के मिशन बन्द करवा दिए और अमुक में हमारे से वादे हो चुके हैं कि मिशन बंद हो जाऐंगे और यह कर दिया और वह कर दिया। बड़ी बढ़ें मारते रहते हैं लेकिन उनसे कोई पूछे कि यह इख़लास तथा वफ़ा जो वहां के लोग दिखाते हैं और यह चेहरे जो एम टी ए अब तो दुनिया को भी दिखाने लग गई है और फिर हम ख़ुद भी वहां जा कर देख रहे हैं ये सब कुछ किया है? क्या यह मिशन बंद कराने का नतीजा है। बहरहाल उन्होंने तो अपनी बढ़ें मारनी हैं मारते रहीं लेकिन यह बातें हमारे ईमान को मज़बूत करती हैं और इस में ज़्यादती का कारण बनती हैं।

(उद्धरित ख़ुतबात मसरूर भाग 2 पृष्ठ 253 से 254)

घाना का दौरा था जो 2008 ई का दौरा था वहां अल्लाह तआला के फ़ज़ल से जमाअत ने एक ज़मीन ख़रीदी है, बड़ा वसीअ रकबा है तक़रीबन पाँच सौ एकड़ के क़रीब वहां जलसा था और अक्सर मर्द तथा औरतें मेरे जाने से पहले पहुंच चुके थे और इस नई जगह पर पहले एक पोल्ट्रीफार्म होता था उस के शैड (shed)थे उस को बदल कर वहां की जमाअत ने जलसे के लिए कुछ रिहायश भी बना दी थी, खिड़कियाँ दरवाज़े लगा कर बैरक जैसी बन गई थीं लेकिन इस के बावजूद जगह की तंगी थी बहुत सारे लोग शामिल हुए लेकिन जो लोग वहां आए हुए थे किसी ने भी इस जगह की तंगी की शिकायत नहीं की। कोई शिकवा नहीं किया। जलसा में उनमें बहुत लोग ऐसे थे जो बड़े अच्छे खाते पीते लोग थे, कारोबारी लोग थे, स्कूलों के पढ़ाने वाले थे, दूसरे काम करने वाले थे। अगर उनको रिहायश नहीं मिली तो बाहर सफ़ बिछा कर आराम से सौ गए। एक तो वैसे ही इस घानीन क़ौम में सब्र है लेकिन इन दिनों में तो खासतौर पर उन्होंने बहुत सब्र दिखाया। किसी ने एक दो ऐसे लोगों से पूछा जो इस तरह बाहर पड़े हुए थे कि तुम्हें बड़ी तकलीफ़ हुई होगी तो उन्होंने कहा हम तो जलसा सुनने आए हैं और समय के ख़लीफ़ा की मौजूदगी में जलसा हो रहा है। दो दिन की अस्थायी तकलीफ़ से क्या फ़र्क़ पड़ता है। हम ख़ुश हैं कि इस जलसे में शमूलीयत की अल्लाह तआला ने हमें तौफ़ीक़ प्रदान फ़रमाई।

बुर्कीना फासो से भी लोग वहां आए हुए थे। दूसरे पड़ोसी देशों से आए हुए थे। मुझे पता लगा कि बुर्कीना फासो से जो क़ाफ़िला आया हुआ है बहुत बड़ा था उनमें कुछ लोगों को खाना नहीं मिला, तीन हज़ार के क़रीब उनकी संख्या थी। सबसे बड़ी संख्या उन्ही की थी जो वहां गई थी। तीन सौ ख़ुद्दाम साईकलों पर भी सोला सौ किलो मीटर का सफ़र कर के वहां आए थे। बहरहाल वहां के एक मुबल्लिग़ को मैं ने कहा उनको खाना नहीं मिला। उनसे क्षमा कर दें और आइन्दा आप लोगों ने उनका ख़्याल भी रखना है। जब उन्होंने उनको क्षमा का पैग़ाम पहुंचाया तो उन्होंने जवाब दिया कि हम जिस मक़सद के लिए आए थे वह हमने हासिल कर लिया। खाने का क्या है वह तो रोज़ खाते हैं । अब ये ग़रीब लोग बेचारे रोज़ भी क्या खाते होंगे। उन्होंने कहा जो खाना हम उस वक़्त खा रहे हैं, रुहानी फ़ायदा उठा रहे हैं वह रोज़ रोज़ कहाँ मिलता है। बुर्कीना फासो की जमाअत अब भी इतनी पुरानी नहीं है। जब मैं दौरे पर गया हूँ तो उस वक़्त मेरा ख़्याल है दस पंद्रह साल पुरानी थी। अब तीस साल पुरानी हो गई होगी लेकिन ये लोग इख़लास तथा वफ़ा और मुहब्बत में तरक़्क़ी करते चले जा रहे हैं। ग़रीबी का यह हाल है कि कुछ लोग एक जोड़ा जो कपड़े पहन के आए थे वही कपड़े उनके पास थे, इसी में तीन चार दिन या पाँच दिन या हफ़्ता गुज़ारा और फिर सफ़र भी किया। पैसे जोड़ जोड़ के जलसे पर पहुंचे थे कि ख़िलाफ़त जुबली का जलसा है और समय के ख़लीफ़ा की मौजूदगी में हो रहा है इसलिए हम ने इस में ज़रूर शामिल होना है। अत: ऐसी मुहब्बत ख़ुदा तआला के इलावा और कौन पैदा कर सकता है। जो ख़ुद्दाम साईकलों पर सवार हो कर आए थे उनके इख़लास का अंदाज़ा भी इस बात से होता है कि विभिन्न जगहों पर पड़ाव करते हुए सात दिन निरन्तर सफ़र करते रहे और यहां पहुंचे। इन साईकल सवारों में कुछ पच्चास साठ साल की उम्र के लोग भी थे और तेरह चौदह साल के दो बच्चे भी शामिल थे। वहां के ख़ुद्दामुल अहमिदया के जो सदर साहिब थे, उन्होंने किसी के पूछने पर कि किस तरह सफर हुआ? बड़ी मुश्किल हुई होगी? जवाब दिया कि इब्तिदाई मुस्लमानों ने इस्लाम की लिए बेशुमार क़ुर्बानियां दी हैं। हम यह चाहते थे कि हमारे ख़ुद्दाम भी हर तरह की क़ुर्बानी के लिए तैयार हूँ और हमारी इच्छा थी कि ख़िलाफ़त जुबली के सिलसिले में कोई ऐसा प्रोग्राम किया जाए जिससे ख़िलाफ़त के साथ हमारे इख़लास और वफ़ा का इज़हार हो और हम समय के ख़लीफ़ा को बताएं कि हम क़ुर्बानी के लिए तैयार हैं और हर चैलेंज के क़बूल करने के लिए तैयार हैं। जब यह साईकल सवार सफ़र शुरू करने लगे थे तो टीवी के प्रतिनिधि ने वहां उनसे पूछा कि साईकल तो आप लोगों के बहुत ख़राब हालत में हैं। यहां के यूरोप के साईकलों की तरह तो नहीं। टूटे हुए साईकल हैं और साधारण साईकल हैं किस तरह इतना बड़ा सफ़र करेंगे तो जमाअत के प्रतिनिधि ने उनको कहा कि यद्यपि साईकल पुरानी हैं लेकिन ईमान और अज़म हमारा बहुत बड़ा है। हम ख़िलाफ़त के इनाम के शुक्राने के तौर पर यह सफ़र कर रहे हैं और जब नैशनल टीवी ने यह ख़बर प्रसारित की तो इस टीवी ने इस ख़बर का आग़ाज़ भी इस तरह किया, जो सुर्ख़ी पढ़ी गई वो इस तरह थी कि अल्लाह की लिए ख़िलाफ़त जुबली के लिए वागह से इक्रा का सफ़र। वागह बुर्कीना फासो की राजधानी है और इक्रा घाना की राजधानी है और लिखा कि यद्यपि साईकल पुरानी हैं लेकिन ईमान बहुत ही मज़बूत है। अख़बार ने जो ख़बर दी तो यह शीर्षक लगाया। यह अहमदी कोई पैदाइशी अहमदी नहीं हैं ,कोई सहाबा की औलाद में नहीं हैं बल्कि हज़ारों मील दूर बैठे हुए कुछ ऐसे इलाक़ों के रहने वाले हैं जहां कच्ची सड़कें हैं और कुछ जगह सड़कें भी नहीं हैं। ऐसी जगहों पर रहने वाले लोग जहां पानी बिजली की सहूलतें भी नहीं थीं। इन लोगों ने कुछ साल पहले अहमदियत स्वीकार कर के फिर इख़लास व वफ़ा के ऐसे नमूने दिखाए कि हैरत होती है। कुछ जगह उनको ग़ुर्बत ने बिलकुल बेहाल किया हुआ है लेकिन हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सच्चे ग़ुलाम की जमाअत में शामिल हो कर वह इख़लास उनमें पैदा हो गया है कि जहां धर्म का सवाल पैदा हुआ या जब भी सवाल पैदा हो वहां उनके इरादे चट्टानों की तरह मज़बूत हैं और हर क़ुर्बानी के लिए तैयार हैं और मुहब्बत से भरे हुए हैं। अत: हमेशा हमें दुआ करते रहना चाहिए कि अल्लाह तआला उनके इख़लास तथा वफ़ा को भी बढ़ाए और हम सब के इख़लास तथा वफ़ा को बढ़ाता जाए।

बुर्कीना फासो के एक दोस्त ईसा साहिब थे। उन्होंने कहा कि मैं ने 2005 ई में बैअत की थी और जब उनसे पूछा गया तो उस वक़्त तीन साल हुए थे। उन्होंने ये बताया कि तीन साल तो हो गए हैं लेकिन मुझे आज पता चला है कि मैं क्या हूँ और कितना ख़ुश-क़िस्मत हूँ और मैंने क्या पाया है। अपनी ख़ुशी का इज़हार मेरे वर्णन से बाहर है क्योंकि आज मैंने समय के ख़लीफ़ा को देखा और मुलाक़ात की। कुछ की ख़िलाफ़त से मुहब्बत आँसूओं की शक्ल में उनकी आँखों से बह रही थी। तो यह इख़लास तथा वफ़ा है जो नई क़ायम होने वाली जमाअतों में है।

(उद्धरित ख़ुतबात मसरूर भाग 6 पृष्ठ 181 से186)

पिछले साल किसी फ़ित्ना फैलाने वाले की वजह से कि उसने एक ग़लतफ़हमी को पकड़ कर फ़ित्ना फैलाने की कोशिश की तो जमाअत के कुछ मख़लसीन भी, नौजवान मख़लसीन तो थे लेकिन नौजवानों में ज़्यादा-तर उस की बातों में आ गए और उनका रवैय्या ज़रा अजीब हो गया। अपने आपको अहमदी कहते थे लेकिन निज़ाम से अलग हो रहे थे। बहरहाल माली से मैंने उनके एक स्थानीय मुबिल्लग़ मआज़ साहिब को वहां भेजा। उन्होंने वहां जा के उनको समझाया। जब बताया कि तुम एक तरफ़ कहते हो ख़िलाफ़त से तुम्हारा सम्बन्ध है और दूसरी तरफ़ निज़ाम से हट रहे हो तो यह दरुस्त नहीं है तो लगभग सभी ने माफ़ी के ख़ुतूत लिखने शुरू कर दिए और उन्होंने कहा कि हम ग़लतफ़हमी की वजह से और तर्बीयत की कमी की वजह से उन बातों में आ गए थे। हमारा ख़िलाफ़त के साथ वफ़ा का मुकम्मल सम्बन्ध है और हम सोच भी नहीं सकते कि ख़िलाफ़त से कभी अलग हों। अत: दुबारा वह अल्लाह तआला के फ़ज़ल से निज़ाम जमाअत का हिस्सा बन गए। तर्बीयत की कमी थी तो उखड़े। जहां एहसास दिलाया गया तो फ़ौरन अपनी ग़लती का एहसास हुआ और ख़िलाफ़त से कामिल वफ़ा के सम्बन्ध का इज़हार किया और कहा कि जब हम अलग थे तब भी हम ख़िलाफ़त से अलग नहीं हुए थे। हम तो कुछ ओहदे दारों से अलग हुए थे। तो बहरहाल यह उनकी वफ़ा और इख़लास का स्तर है ,सम्बन्ध है। इसी तरह गेम्बिया से आए हुओं का भी यही हाल था। एवरी कोस्ट से लोग आए थे। दूसरे देशों से आए हुए थे। हर एक अपने अपने अंदाज़ में इख़लास और वफ़ा और फ़िदाईत में बढ़ा हुआ था।

घाना में जलसा के दौरान पहले भी मैं वर्णन कर चुका हूँ लंबी दूरी थी। जलसा गाह से ले के जहां हमारी रिहायश थी। वहां उस तक पहुंचने में सड़क ज़रा बल खाती जाती थी। इस लिए एक किलो मीटर अधिक बन जाती था। औरतें मर्द खड़े होते थे। औरतों ने बच्चों को उठाया होता था और सलाम करवाती थीं। मुहब्बत का एक इज़हार हो रहा होता था, मुहब्बत टपक रही होती थी। ख़िलाफ़त जुबली के जलसे में वहां औरतों की संख्या भी लगभग पच्चास हज़ार थी और सब ख़िलाफ़त से इख़लास तथा वफ़ा का इज़हार कर रहे थे और उनकी मुहब्बत उनकी आँखों से, उनके रवैय्ये से, उनकी शक्लों से, उनके चेहरों से टपक रही होती थी। फिर ये सब लोग अपनी नमाज़ों की हिफ़ाज़त करना भी जानते हैं। नमाज़ों में भी और तहज्जुद में

भी बड़ी बाक़ायदगी से शामिल होते थे

नाइजीरिया में जब दूसरी बार गया हूँ तो बेनिन से बाई रोड(by road)गया था या यह पहली बार वाला ही क़िस्सा है। शायद 2004 ई का ही ज़िक्र है बहरहाल रास्ते में एक जगह थी वहां रुकना था। पहले तो प्रोग्राम नहीं था लेकिन उन्होंने कहा कि मस्जिद नई बनी है देख लें तो वहां लोग मौजूद थे। इन सबकी मर्दों की बच्चों की यह इच्छा थी कि हाथ मिलाना हो जाए। औरतें चाहती थीं क़रीब से देख लें। वक़्त की कमी की वजह से हाथ मिलाना तो मुम्किन नहीं था लेकिन जो ज़ोर लगा के कर सकते थे उन्होंने कर भी लिया। इस भीड़ में एक वक़्त बड़ा दबाव पड़ गया था तो हमारे क़ाफ़िले के एक साथी ने किसी औरत को कह दिया पीछे हट जाओ। तो बड़े ग़ुस्से में वह औरत आई और लगता था ग़ुस्से में इस शख़्स को उठा कर बाहर फेंक देगी कि तुम होते कौन हो कि मेरे और समय के ख़लीफ़ा के बीच में आने वाले। तो बहरहाल ये उनके जज़बात थे। ख़ैर थोड़ी देर के बाद मैंने उन्हें ख़ामोश होने के लिए कहा और कहा बैठ जाएं। तब वहां सैंकड़ों की तादाद में जो अहमदी थे वो ख़ामोश हुए और बैठ गए। यह है उनका ख़िलाफ़त से सम्बन्ध।

(उद्धरित ख़ुत्बाते मसरूर भाग 6 पृष्ठ 191 से 192)

अमरीका को दुनिया समझती है कि वहां सिर्फ भौतिक सोच रखने वाले लोग हैं और धर्म से उनका सम्बन्ध कम है। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अलसालिस ने भी अपनी एक घटना का ज़िक्र किया है कि किस तरह एक बार उनको एक ख़तरे का ख़त मिला था। संभावना थी। जब बात बाहर निकली तो इस पर वहां के दो सैक्योरिटी के माहिरीन अहमदी थे वे ख़ुद ही पहुंच गए और सारी रात बाहर रह कर पहरा देते रहे। तो बहरहाल अमरीका वालों में भी बड़ा इख़लास है। मेरे दौरे के दौरान जब भी मैं वहां दौरे पर गया हूँ उन्होंने हमेशा इख़लास तथा वफ़ा का इज़हार किया है। यहां भी अमरीका से वफ़ूद आते हैं वे भी इस बात का इज़हार करते हैं कि किस तरह उनको ख़िलाफ़त से इख़लास तथा वफ़ा का सम्बन्ध है और उनका अमल इस बात को रद्द करता है कि वे सिर्फ़ दुनिया-दारी में शामिल हैं। नौजवान डयूटी देने वालों ने स्थायी मेरे साथ रह कर अपना वक़्त गुज़ारा है, वे सफ़र में साथ रहे और अपने कारोबारों को और नौकरीयों को कइयों ने दाव पर लगा दिया, कोई पर्वा नहीं की। ऐसे भी थे जिन्हों ने बताया कि हमारी नौकरियां शुरू हुई थीं और जलसे के लिए आपसे मुलाक़ात के लिए रुख़स्त नहीं मिल रही थी तो हम नौकरियां छोड़कर आ गए हैं।

(उद्धरित ख़ुत्बाते मसरूर भाग10 पृष्ठ 424)

कैनेडा के ख़ुद्दाम हैं उनका भी यही रवैय्या है। नौजवान हैं, बच्चे हैं, औरतें हैं। दुनिया में चाहे अमरीका हो या कैनेडा हो या यूरोप का कोई देश हो, हर जगह इख़लास तथा वफ़ा के नमूने दिखाए जाते हैं और यह इख़लास तथा वफ़ा कोई इन्सानी कोशिश पैदा नहीं कर सकती। कुछ साल पहले जर्मनी में मैं ने एक ख़ुत्बा दिया था जिसमें ख़िलाफ़त के साथ इताअत और वफ़ा का विषय वर्णन किया था। वह सिर्फ़ जर्मनी वालों के लिए नहीं था बल्कि वह तो हर एक के लिए था और होना चाहिए लेकिन वहां के हालात की वजह से कुछ उदाहरण मैंने जर्मनी की दे दी थीं। बहरहाल इस पर दुनिया-भर के अहमदियों ने प्रतिक्रिया दिखाई और फ़ौरी तौर पर ख़िलाफ़त की कामिल इताअत और मुकम्मल वफ़ा का इज़हार किया। जर्मनी वालों ने भी इसी तरह इज़हार किया और जर्मनी में तो खासतौर पर कुछ ने इस बात पर इज़हार किया कि हम में से कुछ ओहदेदार कुछ हिदायात की तावीलें और अर्थ निकालने लग जाते हैं और आइन्दा इंशा अल्लाह ऐसा नहीं होगा। अल्लाह करे कि वे इस पर क़ायम भी रहें और दुनिया के हर देश में ये क़ायम रहें।

(उद्धरित ख़ुत्बाते मसरूर भाग 12 पृष्ठ 369)

अरदन से क़ासिम साहिब हैं वह लिखते हैं कि "हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सच्चाई की सबसे ख़ूबसूरत और महान दलील यह है कि ख़ुदा तआला ने ख़िलाफ़त की मुहब्बत और इताअत मेरे दिल में ख़ुद पैदा कर दी है। कहते हैं कुछ साल पहले जब मैंने बैअत का फ़ैसला किया तो मेरे दिल में यह ख़्याल गुज़रा कि क्या वास्तव में जमाअत अब तक हक़ पर है और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मक़सद पर चल रही है या नहीं? इस वक़्त तक मुझे ख़िलाफ़त का कुछ ज्ञान न था। इस पर ख़ुदा तआला ने ख़्वाब में मुझे दिखाया कि ख़लीफ़तुल मसीह सलामती और अमन फैला रहे हैं और लड़ाई झगड़ा करने वालों के बीच फ़ैसला कर रहे हैं। कहते हैं मैंने अपना हाथ आपके हाथ पर रखा" यह ख़त वह मुझे लिख रहे हैं। "और अँगूठी को चूमा । इस वक़्त मैंने आपकी शफ़क़त और मेहरबानी को महसूस किया और मेरे दिल में आपके लिए ग़ैरमामूली मुहब्बत पैदा हो गई जो दिन प्रतिदिन बढ़ रही है। मैं तजदीद बैअत करना चाहता हूँ और आपकी इताअत से निकलने वाले हर शख़्स से बेज़ारी का इज़हार करता हूँ।"

(जलसा सालाना बर्तानिया 2017 ई से दूसरे दिन बाद दोपहर का ख़िताब, अलफ़ज़ल इंटरनेशनल 6 अप्रैल 2018 ई पृष्ठ 15)

फिर बुलग़ारिया है वहां हमारे विरोधियों ने विरोध में कोई कमी नहीं छोड़ रखी थी। अब बड़े अर्से के बाद जा कर जमाअत रजिस्टर्ड हुई है। एक बार रजिस्ट्रेशन कैंसल हो गई थी। कुछ अहमदी लोगों को बुलग़ारिया के मुफ़्ती ने लालच इत्यादि देकर जमाअत से इन्कार करने के लिए भी कहा लेकिन अल्लाह तआला के फ़ज़ल से सभी अहमदी न सिर्फ यह कि ईमान पर क़ायम हैं बल्कि पहले से बढ़कर इख़लास का नमूना दिखा रहे हैं और ख़िलाफ़त अहमदिया के साथ वफ़ा का सम्बन्ध साबित कर रहे हैं। एक ख़ातून थीं उनके पास तीन लोग गए और जमाअत से इन्कार और अपने साथ शामिल होने पर मदद का भी कहा कि हम तुम्हारी मदद करेंगे। इस ख़ातून ने, इस मुजाहिदा ने बड़े ज़ोर से कहा कि अहमदियत सच्ची है और मैं अपने ख़लीफ़ा से मिल के आई हूँ और सबसे बढ़कर ख़ुदा तआला ने मुझे तीन चार ख़्वाबें दिखाई हैं और बता दिया है कि यह जमाअत सच्ची है। इसलिए अब उसे छोड़ने का तो सवाल ही पैदा नहीं होता।

(उद्धरित समापन ख़िताब जलसा सालाना जर्मनी 30 जून 2013 ई अलफ़ज़ल इंटरनेशनल भाग 20 शुमारा 44 दिनांक 1 नवम्बर 2013 ई पृष्ठ 14)

बेनिन के आजकल जो मुबल्लिग़ इंचार्ज हैं वह लिखते हैं कि नौ-मुबाईन के जलसे में एक नौ मुबाइअ रज़्ज़ाक़ साहिब ने नौ मुबाईन की नुमाइंदगी करते हुए कहा कि दुनिया के निज़ाम में किसी को मसला हो तो वह चीफ़ के पास जाता है। न बात बने तो तहसीलदार के पास जाता है। फिर मेयर के पास जाता है। फिर वज़ीर के पास जाता है फिर प्रधान्मन्त्री के पास और वह भी पता नहीं आपकी बात सुने या ना सुने ,काम करे या ना करे लेकिन जमाअत अहमदिया का निज़ाम तो कमाल है जमाअत अहमदिया के पास तो ख़लीफ़ा है जो हर एक की बोली समझते हैं और हर रंग तथा नस्ल को नवाज़ते हैं। कहने लगे यह ख़िलाफ़त अहमदिया की ही बरकत है कि हम क़ुरआन पढ़ने लग गए हैं और वह इस्लाम जो हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम लेकर आए थे वह आज हम तक पहुंच गया है।

फ्रांस से लैला साहिबा कहती हैं मैंने 2017 ई में बैअत की थी। हर सुबह आपका ख़त पढ़ती हूँ जिसने मेरी ज़िन्दगी बदल के रख दी है। आपकी हिफ़ाज़त और समर्थन और सहायता के लिए सारी नमाज़ों में दुआ करती हूँ। अब यह दुआ की तहरीक भी अल्लाह तआला की तरफ़ से पैदा की हुई है। बैअत के बाद एक नई इन्सान बन गई हूँ।

माली के रीजन सान (San) के मुबल्लिग़ लिखते हैं कि हमारी एक जमाअत वोलों (Wolon) के एक मैंबर अब्दुर्रहमान कोलेबाली साहिब हैं। वफ़ात पा गए हैं । उन्होंने कुछ समय पहले अपने बच्चों को जमा कर के वसीयत की कि अगर मैं जवान होता और चल फिर सकता तो मैं जमाअत के मिशन में जा कर बैठ जाता और जमाअत मुझे जो भी काम देती वह करता और इस के साथ उन्होंने अपने बच्चों को नसीहत की कि उनका दो महीने का चन्दा रहता है उनको उनकी ज़िन्दगी का पता नहीं लेकिन वह ज़रूर अदा कर दिया जाये ताकि मैं क़र्ज़दार होने की सूरत में इस दुनिया से न जाऊं। तीसरी उन्होंने अपनी औलाद को वसीयत यह की कि ख़िलाफ़त से वफ़ादार रहना और इस से बेवफ़ाई न करना और हमेशा चंदे देते रहना।

गेम्बया के अमीर साहिब लिखते हैं कि एक औरत रहमत जालू साहिबा हैं उन्होंने बैअत की। जब उन्हें ख़ुदा तआला की राह में क़ुर्बानी का बताया तो उन्होंने उसी वक़्त सौ डलासी अदा कर दिए। उनकी छोटी सी दुकान है। अपनी हैसियत से बढ़कर चन्दा देती हैं और कहने लगीं कि मैं तो सिर्फ अल्लाह और समय के ख़लीफ़ा का प्यार चाहती हूँ। यह सम्बन्ध और मुहब्बत है जिसकी वजह से मैं देती

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 3010 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

हूँ और ख़ुदा की लिए क़ुर्बानी दे रही हूँ।

ताजिकस्तान के दोस्त इज़्ज़त अमान साहिब हैं। वह कहते हैं जब मेरी माता की उम्र बहत्तर साल थी तो बहुत बीमार हो गईं। पहले ही कई सालों से दिल की बीमारी और ज़हनी दबाओ की वजह से बीमार रहती थीं लेकिन इस बीमारी की वजह से उनकी सेहत बहुत कमज़ोर हो गई और डाक्टर की बातों से हम रिश्तेदारों में मायूसी फैल गई। कहते हैं ख़लीफ़तुल मसीह के साथ मुलाक़ात और इस सम्बन्ध की वजह से मुझे यक़ीन था कि मैं दुआ के लिए कहूँगा तो वह ज़रूर अल्लाह तआला क़बूल करेगा। बहरहाल कहते हैं जब मैं ने लिखा तो दुआओं के साथ होमियोपैथिक दवाईयां भी मुझे मिलीं। मेरी माता ठीक हो गईं और इस वक़्त जब उन्होंने लिखा था मेरी माता की उम्र उनासी साल है और वह हज का इरादा भी रखती हैं और यह ख़िलाफ़त के साथ सम्बन्ध और समय के ख़लीफ़ा की दुआओं का नतीजा है कि अल्लाह तआला ने उनको ज़िन्दगी दी है।

अल्लाह तआला ईमान और यक़ीन पैदा करने के लिए ऐसे नज़्ज़ारे दिखा देता है ताकि बताए कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने जो फ़रमाया था कि वह ख़ुदा तआला की तरफ़ से था और सच था

एक अहमदी बच्चे की ख़िलाफ़त से मुहब्बत की घटना ताहिर नदीम साहिब लिखते हैं कि तुर्की के दौरे के दौरान एक अहमदी दोस्त के घर जाने का इत्तिफ़ाक़ हुआ। बैठे ही थे कि उनका तीन चार साल का बच्चा आया और सलाम कर के मेरे कान में कुछ कहने लगा। कान में कहने लगा कि मैंने हुज़ूर को ख़त भिजवाना है। क्या आप ले जाऐंगे? मैंने कहा ठीक है ले जाऊँगा क्यों नहीं। इस पर वह बच्चा काग़ज़ पर दो लाइनें, उल्टी सीधी लकीरें खींच कर ले आया। मैंने इस से पूछा ख़त में क्या लिखा है? कहने लगा मैंने लिखा है कि हुज़ूर मुझे आपसे मुहब्बत है। कहते हैं मैंने यह ख़त यहां दे दिया। इस का जवाब भी मेरी तरफ़ से चला गया। जब इस बच्चे को जवाब मिला है तो उस के पिता के कहने के अनुसार उस की भी और इस के बाक़ी सब घर वालों की भी ख़ुशी देखने वाली थी

इसी तरह एक और बच्चे का उदाहरण है। मेसीडोनिया के मिबल्लिग़ इंचार्ज लिखते हैं कि पिछले दिनों बोस्निया के दौरे के दौरान मेरी एक दोस्त से वाक़फ़ीयत हुई। पाकिस्तानी दोस्त थे तब्लीग़ी बातचीत हुई। मुलाक़ातों का सिलसिला जारी रहा। उसने बताया कि कुछ समय पहले दुबई एयरपोर्ट पर उनकी मुलाक़ात एक फ़ैमिली से हुई थी जिनकी एक तीन चार साल की बच्ची कह रही थी हम सबको नमाज़ पढ़नी चाहिए और सच बोलना चाहिए। जब मुझे पता चला कि इस फ़ैमिली का सम्बन्ध जमाअत अहमदिया से है तो मैंने इस बच्ची से पूछा कि तुम्हारी ज़िन्दगी की सबसे बड़ी ख़ाहिश किया है? तो कहने लगी कि लंदन में प्यारे हुज़ूर से मिलना चाहती हूँ। कहता है कि इस बात ने मुझ पर बहुत गहरा असर छोड़ा कि इतनी छोटी उम्र है और इस की सबसे बड़ी इच्छा ख़लीफ़ा से मुलाक़ात करना है

इसी तरह आजकल बच्चों की एक गेम थी। इस पर जब मैंने रोका कि नहीं खेलनी इस से कई बार ग़लत आदतें पड़ जाती हैं तो माता पिता पहले तो परेशान हुए कि हम किस तरह बच्चों को रोकेंगे लेकिन अक्सर माता पिता ने मुझे लिखा कि आपका ख़ुत्बा सुनने के बाद बच्चों ने ख़ुद आकर हमें कहा कि क्योंकि अब समय के ख़लीफ़ा की तरफ़ से आ गया है कि नहीं खेलना तो हम नहीं खेलेंगे और अब भी अक्सर मुझे ख़त आते हैं। लोग लिखते हैं कि क्या हम यह खेल अब इतनी देर खेल सकते हैं या कर सकते हैं यानी कि उनमें एक एहसास है कि समय के ख़लीफ़ा के साथ जो सम्बन्ध है इस की वजह से हमने धोखा नहीं देना और वह काम करना है जो समय के ख़लीफ़ा हमारी बेहतरी के लिए चाहता है।

होंडोरोस के मुबल्लिग़ लिखते हैं कि एक स्थानीय अहमदी "पुर्सी मौर्यो" विभिन्न समस्याओं का शिकार थे। उनके हालात को देखते हुए मैंने कहा कि अपनी परेशा-नीयों के हवाले से दुआ के लिए समय के ख़लीफ़ा को ख़त लिखें। जब उन्होंने ख़त लिखा तो कहते हैं कि इन की प्राय समस्याएं अपने आप हल होना शुरू हो गई हैं। कहते हैं कि इस से मुझे एक ग़ैबी ताक़त मिली है और ख़िलाफ़त पर मेरा यक़ीन और भरोसा बढ़ा है।

मराक़श से अफ़अरी साहिब हैं। कहते हैं कि आपने मेरे दिल और ज़िन्दगी को रहमत और बरकत से मुनव्वर कर दिया है। ख़ुदा का शुक्र है कि उसने मुझे हिदायत दी है। मुझे आपको देखकर नशा सा होने लगता है। एक अजीब एहसास होता है। मैं न कभी आपके साथ बैठा न कभी बात की। यक़ीनन यह ख़ुदा की प्रदान की हुई और सच्ची मुहब्बत है। अल्लाह आपका समर्थन फ़रमाए।

फिर यमन से ईमान साहिबा हैं। कहती हैं कि मुझे हुज़ूर से अपने आप, अपने बच्चों और अपने घर वालों और सब लोगों से ज़्यादा मुहब्बत है। इस से मेरे दिल की तसकीन और आन्नद का सामान होता है और फिर मुझे उम्मीद भी होती है कि इंशा अल्लाह हालात ठीक हो जाऐंगे। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के प्रादुर्भाव और आप के बाद ख़िलाफ़त इसलिए क़ायम हुई कि बिगाड़ का सुधार हो और हमारे दुनिया के दुखों से भारी दिलों में उम्मीद पैदा हो। मेरी हालत तो ऐसी है जैसी आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया था कि हे ख़ुदा अगर तू हम से नाराज़ नहीं तो फिर हमें और किसी बात की पर्वा नहीं। मेरी ख़ुदा तआला से दुआ है कि मैं इन ख़ुश क़िस्मतों में से हूँ जिनसे आप मुहब्बत करते हैं और जिन से और जिनके गर वालों और औलाद से आप प्रसन्न हैं।

फिर तौफ़ीक़ साहिब त्यूनस से हैं। यह लिखते हैं हमें आपसे मुहब्बत है। हम आपकी कश्ती पर सवार हैं और इस में तर्बीयत पाई और हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के स्रोत से खाया पिया। हम अपने अह्द पर क़ायम हैं। आपके साथ जुड़े बग़ैर हमारा सुधार नहीं हो सकती। हम दुनिया नहीं चाहते सिर्फ यह आशा है कि हमारे बारे में यह कहा जाये कि अमुक इस मुबारक जमाअत केअनुकरण की बरकत से कामयाब हो गया। अह्द पर क़ायम रहने और इस के अनुसार अनुकरण करने की तौफ़ीक़ मिले और मुस्लमानों के इत्तिहाद के लिए दुआ का निवेदन है।

बहरहाल ये कुछ उदाहरण मैंने दिए हैं जो इस बात को वाज़िह करती हैं कि दिलों में इख़लास तथा वफ़ा का सम्बन्ध अल्लाह तआला पैदा करता है और कोई दुनियावी ताक़त उसे छीन नहीं सकती। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया था कि अल्लाह तआला के वादों को पूरा होते तुम देखोगे। अल्लाह तआला करे कि हम में से अक्सरीयत को इन वादों को पूरा होते देखने की तौफ़ीक़ मिले

अब एम टी ए के बारे में भी में एक ऐलान करना चाहता हूँ। यह भी अल्लाह तआला का एक वादा था जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का पैग़ाम दुनिया में फैलाने के बारे में था। बहरहाल 27 मई से ख़िलाफ़त दिवस वाले दिन से एक नए क्रम के साथ ये चैनल शुरू किए गए हैं। उनका विस्तार मैं वर्णन कर देता हूँ। शुरू में कुछ जगह अमरीका में खासतौर पर कुछ थोड़ी सी मुश्किल भी पेश आई थी लेकिन अब उम्मीद है हल हो गई होगी। लेकिन बहरहाल इस निज़ाम के साथ जो शुरू किया गया है में यह कुछ बता देना चाहता हूँ कि विभिन्न क्षेत्रों के एतबार से एम टी ए को आठ चैनलों में विभाजित कर दिया गया है।

एम टी ए वन जो है यह चैनल प्राय यूके और यूरोप के कुछ इलाक़ों के दर्शकों के लिए होगा। इस चैनल की मूल भाषा (main language) जो भाषाएं हैं वे अंग्रेज़ी और उर्दू होंगी। इसी चैनल पर अंग्रेज़ी और उर्दू भाषाओं के प्रोग्राम प्रसारित किए जाऐंगे इसी तरह कुछ दूसरी भाषाओं के प्रोग्राम भी अंग्रेज़ी और उर्दू अनुवाद के साथ प्रसरित किए जाऐंगे। मेरे लाईव नए रीकार्डड् प्रोग्राम भी इसी चैनल के प्रोग्रामMTA 1 वर्ल्ड के तौर पर बाक़ी समस्त चैनल पर भी प्रसरित होंगे

MTA 2 यूरोप। ये चैनल यूरोप और मिडल ईस्ट के देशों के दर्शकों के लिए होगा।इस पर उर्दू, अंग्रेज़ी, टर्किश, फ्रैंच, स्पेनिश, जर्मन, डच, रशियन औरPersian (फ़ारसी भाषाओं के प्रोग्राम प्रसरित किए जाऐंगे। इस पर उस वक़्त

अल्लाह तआला का उपदेश

رَبَّنَآ اِنَّنَآ اٰمَنَّا فَاغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ (आले इम्रान 17)

हे हमारे रब्ब निसन्देह हम ईमान ले आए

अतः हमारे गुनाह माफ कर दे और हमें आग के अज़ाब से बचा।

तालिबे दुआ

MUHAMMAD MAJEED AND FAMILY

AMEER DIST: ROUPR. PUNJAB

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अगर तुम चाहते हो कि तुम्हें दोनों दुनिया की फत्ह हासिल हो और लोगों के दिलों पर फत्ह पाओ तो पवित्रता धारण करो, और अपनी बात सुनो, और दूसरों को अपने उच्च आचरण का नमूना दिखाओ तब अलबत्ता सफल हो जाओगे।"

तालिबे दुआ

धानू शेरपा

सैक्रेट्री जमाअत अहमदिया देवदमतांग (सिक्कम)

विभिन्न भाषाओं की दो दो घंटे की सर्विसिज़ चलती हैं। ऊपर वर्णित भाषाओं के प्रोग्रामों का इसी तरह पर वृद्धि कर दी जाएगी।

MTA 3 अलारबी। यह चैनल इसी तरह चलता रहेगा जिस तरह इस वक़्त चल रहा है। इस चैनल की मुख्य(main)भाषा अरबी होगी।

MTA 4अफ़्रीक़ा। यह चैनल पूर्वी अफ़्रीक़ा और पश्चिमी अफ़्रीक़ा के देशों के दर्शकों के लिए होगा। इस चैनल की मुख्य भाषाओं या मुख्य भाषाओं अंग्रेज़ी, फ़्रैंच और स्वाहेली होंगी और इन्ही भाषाओं के प्रोग्राम इस पर प्रसरित किए जाऐंगे।

MTA 5अफ़्रीक़ा। यह चैनल पश्चिमी अफ़्रीक़ा के देशों के दर्शकों के लिए होगा। इस चैनल की जो मुख्य भाषा है वह अंग्रेज़ी होगी। इस के इलावा करयूल, हाओसा, चोई और यूरो भाषाओं के प्रोग्राम भी प्रसरित किए जाऐंगे

MTA 6 एशिया । ये चैनल एशिया सेट पर होगा और एशिया ,फ़ार ईस्ट, इंडोनेशिया, जापान, आस्ट्रेलिया, न्यूज़ीलैंड और रशिया इत्यादि देशों के दर्शकों के लिए होगा। इस चैनल की जो मुख्य भाषाएं हैं वे उर्दू, अंग्रेज़ी और इंडोनेशियन होंगी। इस पर उर्दू, अंग्रेज़ी, बंगाली, पुश्तो, सिंधी, सरायकी, फ़ारसी, इंडोनेशियन और रशियन भाषाओं के प्रोग्राम प्रसरित किए जाऐंगे। पहले भी इस तरह हो रहे हैं लेकिन समय के हिसाब से उनकी इस तरह थोड़ी सी तक़सीम कर दी गई है। सम्बन्धित देशों को वह प्रोग्राम मिल चुके होंगे।

MTA 7 एशिया। यह HD चैनल है, छोटी डिश पर देखा जाएगा। यह इंडिया ,पाकिस्तान , बंग्ला देश, श्रीलंका और नेपाल इत्यादि देशों के दर्शकों के लिए होगा। इस चैनल की जो भाषाएं हैं वे उर्दू, बंगाली और हिन्दी होंगी। उनके इलावा इस पर तामिल और मलयालम भाषाओं के प्रोग्राम भी प्रसरित किए जाऐंगे।

MTA 8 अमरीका। यह चैनल अमरीका, नॉर्थ अमरीका और कैनेडा इत्यादि के दर्शकों के लिए होगा। पहले भी यह चल रहा है। इस में थोड़ी सा क्रम बदला गया है। थोड़ी सी तब्दीली की गई है। बहरहाल असल में तो उसूली तौर पर ये वही सारे चैनल इसी तरह जारी हैं जिस तरह पहले जारी थे। बहरहाल यह जो इस में एम टी ए आठ अमरीका का नाम दिया गया है यह अमरीका, नॉर्थ अमरीका और कैनेडा वग़ैरा के दर्शकों के लिए होगा। चैनल की भाषाएं अंग्रेज़ी और उर्दू होंगी। इस के इलावा फ़्रैंच और स्पेनिश भाषाओं के प्रोग्राम भी इस पर प्रसरित किए जाऐंगे।

एम टी ए के जो लाईव प्रोग्राम हैं। उनमें एम टी ए के निम्नलिखित लाईव प्रोग्राम विभिन्न चैनलों पर प्रसरित होंगे।

राहे हुदा, अलहवारुल मुबाशर और बंगला प्रोग्राम एम टी ए के समस्त चैनलों पर। इन प्रोग्रामों का अनुवाद इन चैनलों की मेन भाषाओं के साथ प्रसारित किया जाएगा और फिर एम टी ए जर्नल (Journal) इस्लाम स्वयस्टेन (Sesiyetin) ये जर्मनी की भाषाएं हैं या शब्द हैं। यह MTA 2 यूरोप पर प्रसरित किए जाऐंगे Horizen de Islam यह एम टी ए1 एम टी ए2 यूरोप, एम टी ए4 अफ़्रीक़ा और एम टी ए5 अफ़्रीक़ा पर इस चैनल की मुख्य भाषाओं के साथ फ़्रैंच में प्रसरित किया जाएगा। इस का अनुवाद भी साथ साथ आता रहेगा और इसी तरह इंतिख़ाबे सुख़न इत्यादि के जो प्रोग्राम हैं वह भी एम टी ए1 पर और एम टी ए2 पर यूरोप प्राईम टी ए6 एशिया पर और एम टी ए7 एशिया पर प्रसरित होगा

बहरहाल चैनलों के हिसाब से भी ये थोड़ी सी तबदीली की गई है और शायद की बार सेटिंग में भी प्राय कोई तबदीली नहीं होगी। पहले ही चल रहे हैं। इसी तरह विभिन्न चैनलों को इस हिसाब से ये नाम दिए गए हैं

बहरहाल ये जो निज़ाम बनाया गया है अल्लाह तआला इस में बरकत डाले और एम टी ए को पहले से बढ़कर इस्लाम का हक़ीक़ी पैग़ाम दुनिया को पहुंचाने की तौफ़ीक़ प्रदान फ़रमाए।

(अलफ़ज़ल इन्टरनैशनल19 जून 2020 ई पृष्ठ 5 से 10)

☆ ☆

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अपनी इबादतों को भी विशेष करें और दुनिया को भी इस्लाम की वास्तविक शिक्षा से अवगत कराएं।"

(ख़ुत्बा जुम्अः 17 मई 2019)

तालिबे दुआ

KHALEEL AHMAD

S/O LATE HAJI BASHEER AHMAD SB AND FAMILY, JAMAAT AHMADIYYA BIJUPURA, SAHARANPUR (U.P)

पृष्ठ 2 का शेष

मिशन हाऊस से उपद्रव पैदा हुआ है।

इस घटना के कुछ ही समय बाद जब दिसम्बर 2004 ई में हुज़ूर अनवर अय्य-दहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ फ्रांस दौरा पर तशरीफ़ ले गए तो फ्रांस के जलसा सालाना में यह मेयर शामिल हुआ और हुज़ूर अनवर की मौजूदगी में उसने अपने ऐडरैस में कहा

" आज इस्लाम का जो चेहरा दूसरे लोग प्रस्तुत कर रहे हैं वो ठीक नहीं है। यह जमाअत अहमदिया है जो इस्लाम का पुरअम्न और ख़ूबसूरत रुख़ दिखा रही है।'

यह मेयर उस वक़्त सिर्फ़ 5 मिनट के लिए आया था। अपने संक्षिप्त ख़िताब के बाद जब हुज़ूर अनवर का मआरिफ़ वाला ख़िताब सुनने बैठा तो फिर उठ न सका और पूरा ख़िताब सुना। बाद में भी आध घंटा वहां स्पैशल मार्की में बैठा रहा और इंतिहाई अधीन हो कर और यह कह कर वापस गया कि जो भी आपका काम हो मुझे बताएं मैं हाज़िर हों।

फिर यह मेयर 10 अक्तूबर 2008 ई में जब मस्जिद मुबारक फ्रांस का उद्घाटन हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया था। हाज़िर हुआ था और आज फिर हुज़ूर अनवर अय्य-दहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ से मुलाक़ात के लिए आया था। कहने लगा मैं हुज़ूर को देखकर बहुत ख़ुश हूँ और हुज़ूर से मिलने आया हूँ।

हुज़ूर अनवर ने पूछा आपका काम कैसा चल रहा है। इस पर मेयर ने निवेदन किया कि हमारा जो क्षेत्र है एक क़स्बा की तरह है। सब कुछ अच्छा है

हुज़ूर अनवर के पूछने पर मेयर ने बताया कि उन्हें इस पोस्ट पर 25 साल हो गए हैं। लेकिन इस टर्म के बाद अब मैं यह काम ख़त्म कर रहा हूँ। इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया क्या थक गए हैं या अगली पार्लीमैंट में जाना चाहते हैं। महोदय ने निवेदन किया कि कुछ न कुछ काम तो जारी रखूँगा लेकिन अब सियासत में नहीं रहना चाहता।

मेयर ने निवेदन किया कि अब मैं अपने इलाक़े में अधिक तवज्जा Greenery पर दे रहा हूँ। हम चाहते हैं कि बिना मस्नूई खाद के हम चीज़ें उपलब्ध करें। 2008 ई से मैंने खाद की चीज़ें स्कूलों में रखने से मना किया हुआ है। बिना मस्नूई खाद के प्रयोग के चीज़ें हम स्कूलों में उपलब्ध कर रहे हैं। इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया दूसरों से भी कहें।

मेयर ने निवेदन किया कि जमाअत अहमदिया हर साल, साल के शुरू में विभिन्न इलाक़ों में जाकर सफाई करती है। जमाअत इस इलाक़े में हमारी बहुत मदद करती है। बिना पैसों के काम करती है, बाग़ों की सफाई भी करती है

अमीर साहिब फ्रांस ने निवेदन किया कि मेयर हर स्थान जमाअत की मदद करते हैं जमाअत के हक़ में बात करते हैं।

मेयर ने निवेदन किया मुझे इस क़दर ख़ुशी है कि जमाअत अहमदिया मेरे इलाक़े में है। मैं किसी और पर भरोसा नहीं करता सिर्फ़ जमाअत अहमदिया पर भरोसा करता हूँ। मुझे पता है कि कोई और मुझे कुछ भी न दे लेकिन मैं जमाअत से जो मदद माँगूँगा जमाअत मुझे दे देगी। मेयर ने कहा कि मेरा सारा शहर जमाअत अहमदिया से प्यार करता है सिर्फ मैं ही प्यार नहीं करता।

प्लास्टिक के लिफ़ाफ़ों को बेन BAN) करने के हवाला से बात हुई तो मेयर ने कहा कि जहां-जहां तक मेरा क्षेत्र है मैंने वहां पाबंदी लगा दी है। बाक़ी अभी इस पर बहुत काम होने वाला है, दुकानों इत्यादि में प्रयोग होता है

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया आधी दुनिया में पूलोशन इस प्लास्टिक की वजह से हुई है। गन्द समुंद्र में जा कर फेंक रहे हैं। इंडस्ट्रीज़ का जो Wasteहै। जो आलूदगी है वह सब पानी समुंद्र में जाता है और फिर इस से समुंद्र की ज़िन्दगी को नुक़्सान पहुंच रहा है

मेयर ने निवेदन किया मुझे इस बात का ज्ञान है कि आपकी जमाअत दरख़्त लगाने में प्रत्येक समय लगी रहती है।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया जंगलों से जो दरख़्त काटे गए हैं कुछ उन्होंने दुनिया के माहौल को ख़राब किया है और कुछ अब प्लास्टिक तबाह कर देगा।

इस पर मेयर ने कहा यह 100 फ़ीसद सही है। मेयर ने निवेदन किया कि हुज़ूर सारी दुनिया में जाते हैं। बहुत बड़ी शख़्सियत हैं हुज़ूर हमारा साथ दें। इस पर हुज़ूर ने फ़रमाया हम साथ देंगे। आपके इलाक़े को डिवेलप करने के लिए मदद करेंगे।

इस पर मेयर ने कहा जमाअत पहले ही बहुत मदद करती है मैं सिर्फ प्यार मुहब्बत के लिए यहां आया हूँ।

इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया हम जहां भी रहते हैं वहां के हालात के लिहाज़ से मदद करते हैं। जमाअत हर स्थान पर यह काम करती है इस पर मेयर ने निवेदन क्या मैं तो सिर्फ हुज़ूर को देखने के लिए आया हूँ

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया आप से मिलकर बहुत ख़ुशी हुई आप 11साल बाद मिले हैं तो याद रखा है।आपका शुक्रिया

मेयर ने निवेदन किया कि हुज़ूर अनवर जो दुनिया में अमन की स्थापना के लिए कोशिश कर रहे हैं। आप तेज़ी से इस काम को आगे लेकर जाएं। मैं हुज़ूर अनवर के अंदर जो चीज़ देखता हूँ वह मुझे दुनिया में और कहीं नज़र नहीं आती इस्लाम पर जो दाग़ लगाए जा रहे हैं उनको मिटाने की कोशिश करनी चाहिए।

इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया हम कर रहे हैं। छोटे स्तर पर काम होता है फिर फैलता है। अहमदी तो हर स्थान कर रहे हैं। अमन की स्थापना के लिए हम विभिन्न स्थान प्रोग्राम कर रहे हैं। इस्लाम का सही चेहरा पेश कर रहे हैं।

मेयर ने कहा हमारे इस टाउन की आबादी 7000 लोगों पर आधारित है। रीजन पैरिस के हिसाब से यह एक छोटा सा इलाका है और कई लोग यहां से अपने काम काज के सिलसिला में पैरिस स्थान्तरित हो रहे हैं।

इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया। जो लोग यहां से जा रहे हैं। इस के लिए अगर यहां फ़्लैट टाइप सस्ते घर बनाए जाएं तो जो लोग शहरों से बाहर रहना चाहते हैं वे यहां आकर सस्ते घरों में रहेंगे और भी Maintain रहेगी

इस पर मेयर ने निवेदन किया कि मेरी कोशिश है कि कोई ग़रीब भी है तो हम इस को घर दें। सस्ती रिहायश दें, छोटे घर बनाएँ

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया अब ज़माना आ रहा है कि लोग छोटे घर चाहते हैं ताकि Maintain कर सकें। अब बड़े घरों को सँभालना मुश्किल है। लोग यहां बड़े घर फ़रोख़्त कर रहे होंगे

इस पर मेयर ने निवेदन किया कि हुज़ूर अनवर जो फ़र्मा रहे हैं बिलकुल सही है। यही मेरी सोच है मैं इस पर काम कर रहा हूँ।

इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया। अल्लाह तआला कामयाब करे।

मेयर की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ से यह मुलाक़ात 8 बजकर 45 मिनट तक जारी रही। आख़िर पर मेयर साहिब ने हुज़ूर अनवर के साथ तस्वीर बनवाने का सौभाग्य पाया।

इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ मस्जिद मुबारक तशरीफ़ ले आए और नमाज़ मग़रिब इशा जमा कर के पढ़ाई।नमाज़ों की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने निम्नलिखित तीन निकाहों का ऐलान फ़रमाया

ऐलान निकाह

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने मसनूना ख़ुत्बा निकाह के बाद फ़रमाया। कुछ निकाहों का ऐलान करूँगा

प्रिया ज़ुहरा कंवल पुत्री आदरणीय अहमद असलम साहिब (बेल्जियम का निकाह प्रिय क़ासिम अब्बास बाजवा पुत्र आदरणीय नदीम अब्बास बाजवा साहिब (बेल्जियम)के साथ तय पाया।

प्रिया दानिया नसीर पुत्री आदरणीय नसीर अहमद साहिब (जर्मनी) का निकाह प्रिय एहतिशाम अहमद पुत्र आदरणीय ज़ुल्फ़िक़ार अली साहिब (फ्रांस) के साथ तय पाया

प्रिया शहज़ीन ख़ालिद पुत्री आदरणीय ख़ालिद मसऊद साहिब जर्मनी का निकाह प्रिय अनील अहमद अनस पुत्र आदरणीय अनस अहमद साहिब (फ्रांस) के साथ तय पाया।

निकाहों के ऐलान के बाद हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया "दुआ कर लें अल्लाह तआला यह रिश्ते हर दृष्टि से बाबरकत फ़रमाए। इस के बाद हुज़ूर अनवर ने दुआ करवाई।

इस के बाद हुज़ूर अनवर अपनी रिहायश गाह पर तशरीफ़ ले गए

8 अक्तूबर 2019 ई(दिनांक मंगल)

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने सुबह 6 बजकर 45 मिनट पर मस्जिद मुबारक में तशरीफ़ लाकर नमाज़ फ़ज्र पढ़ाई। नमाज़ की अदायगी के बाद अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपनी रिहायश गाह पर तशरीफ़ ले गए। सुबह हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ की दफ़्तरी मामलों की पूरा करने में व्यस्तता रही

फ़ैमिली मुलाक़ातें

प्रोग्राम के अनुसार 11 बजकर 45 मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ फ़ैमिलीज़ मुलाक़ातों के लिए तशरीफ़ लाए। सब से पहले मस्जिद के हिस्सा में 3 अरब फ़ैमिलीज़ के 26 लोगों ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ से मुलाक़ात का सौभाग्य पाया।

उनमें एक बड़ी फ़ैमिली के सरबराह अब्दुल ग़नी BELARBI साहिब थे। आपकी फ़ैमिली का सम्बन्ध अल-जज़ाइर से है। अहमदी होने की वजह से आप के ख़िलाफ़ अल-जज़ाइर में मुक़द्दमे किए गए और सज़ाएं भी हुईं। महोदय ने बड़ी बहादुरी से इन मुक़द्दमों का सामना किया।

महोदय ने निवेदन किया कि पिता जी ने ख़्वाब देखा कि वह अपने गांव में अकेले थे, ग़ैर अहमदी फ़ैमिली मैंबर उनको छोड़कर जा रहे हैं। हुज़ूर अनवर ख़्वब में तशरीफ़ लाते हैं और फ़रमाते हैं फ़िक्र न करो ख़ुदा तआला यह हालात जल्द बदल देगा।

अब्दुल ग़नी साहिब की माता भी इस मुलाक़ात में मौजूद थीं कहने लगीं कि मेरे बच्चों और बच्चियों पर अहमिदयत के कारण से अल-जज़ाइर में पुलिस केस हुआ है इन को चार चार साल क़ैद की सज़ा मिली है। मैं यह कहना चाहती हूँ कि जो तक़दीर में लिखा है वह तो इन के लिए होगा। मैं हुज़ूर अनवर की सेवा में सिर्फ यह दुआ की दरख़ास्त करना चाहती हूँ कि ख़ुदा तआला इन को जमाअत का और ख़िलाफ़त का वफ़ादार बनाए और हमेशा यह ख़िलाफ़त से चिमटे रहें।

इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया।आप फ़िक्र न करें मुझे पता है आप के बच्चे वफ़ादार हैं। इस पर इअन बच्चों की माता बहुत ख़ुश और प्रसन्न हुईं।

इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपने दफ़्तर तशरीफ़ ले आए जहां अन्य फ़ैमिलीज़ और बहुत सारे लोगों ने इन्फ़िरादी तौर पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ से मुलाक़ात का सौभाग्य पाया

आज सुबह के इस सैशन में अपने प्यारे आक़ा से मुलाक़ात कारने वालों की संख्या 103 थी। प्रत्येक ने हुज़ूर अनवर के साथ तस्वीर बनवाने का सौभाग्य पाया। हुज़ूर अनवर नो दया करते हुए शिक्षा प्राप्त करने वाले छात्रों और छात्राओं को क़लम प्रदान फरमाए और छोटी उम्र के बच्चों,बच्चियों को दया करते हुए चॉकलेट प्रदान फरमाए।

मुलाक़ातों का यह प्रोग्राम दोपहर 2 बजे तक जारी रहा। इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने मस्जिद मुबारक में नमाज़ें पढ़ाईं। नमाज़ों की अदायगी के बाद अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपनी रिहायश गाह तशरीफ़ ले गए

कुछ आयोजनों का ज़िक्र

आज हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ के सम्मान में एक अहम आयोजन का आयोजन यूनाईटिड नेशन (UNO) के एक इदारा UNESCO के हैड ऑफ़िस की इमारत के एक हाल में किया गया था। माली देश के एमबसेडर के तवस्सुत से UNESCO की तरफ़ से इस आयोजन के प्रबन्ध किए गए थे।

इस से पहले मुल्की स्तर पर ब्रिटिश पार्लीमैंट,कैपीटल हल, न्यूज़ीलैंड पार्लीमैंट और डच पार्लीमैंट में आयोजन आयोजित हुए थे और हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने ख़िताबात फ़रमाए थे

फिर समस्त यूरोपीयन देशों की"यूरोपीयन पार्लीमैंट' आयोजित हुई जिसमें हुज़ूर अनवर ने ख़िताब फ़रमाया

आज का दिन भी अपनी दृष्टि से एक तारीख़ बनाने वाला दिन था कि

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह ख़ामिस

ख़िलाफत का निज़ाम भी अल्लाह तआला और उस के रसूल के आदेशों और निज़ाम का हिस्सा है।

(ख़ुत्बा जुम्अ: 24 मई 2019 ई)

तालिबे दुआ

मुहम्मद शुएब सुलेजा पुत्र जनाब मुहम्मद ज़ाहिद सुलेजा मरहूम तथा फैमली, अहमदिया जमाअत कानपुर(उत्तर प्रदेश)

किसी देश की पार्लीमैंट या इदारा में नहीं बल्कि विश्वव्यापि स्तर पर एक इदारा UNESCO मैं जहां दुनिया के सब देशों की नुमाइंदगी होती है। हुज़ूर अनवर के सम्मान में एक आयोजन का आयोजन किया जा रहा था।

दुनिया के किसी भी विश्वव्यापी संस्था के अंदर यह पहला ऐसा आयोजन था जिसमें ख़लीफ़ ख़िताब फ़र्मा रहे थे। इन्शा अल्लाह अब यहां से भी जमाअत के लिए महान सफलताओं, इन्क़िलाबों और विजयों के दरवाज़ें खोले जाएंगे।

प्रोग्राम के अनुसार 3 बजकर 30 मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ मिशन हाऊस दारुस्सलाम से इस आयोजन के लिए रवाना हुए।

UNESCO की बिल्डिंग पैरिस शहर के सैंटर में है। इस बिल्डिंग के क़रीब ही होटल Pullman मैं कुछ देर के लिए क़ियाम का प्रबन्ध किया गया था जहां कई मेहमानों का हुज़ूर अनवर से मुलाक़ात का प्रोग्राम भी था। 4 बजकर 15 मिनट पर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ की होटल Pullman में पधारे ।

वाइस प्रैज़ीडैंट फ्रैंच मुस्लिम कौंसल(यूनीयन)की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ से मुलाक़ात

साढ़े 4 बजे फ्रैंच मुस्लिम कौंसल (यूनीयन के वाइस प्रैज़ीडैंट Mr. Anouar Kbibech ने हुज़ूर अनवर से मुलाक़ात का सौभाग्य पाया। महोदय फ्रैंच मुस्लिम शख़्सियत हैं और मराक्को नस्ल के हैं। यह पहले मुस्लिम यूनीयन के प्रैज़ीडैंट भी रहे हैं इस वक़्त वाइस प्रैज़ीडैंट हैं।

महोदय ने निवेदन किया कि हम फ्रांस के मुसलमानों की तरफ़ से ख़लीफ़तुल मसीह को स्वागत कहते हैं। उन्होंने बताया 2 साल पहले वह मुस्लिम यूनीयन के सदर थे। अब नायब सदर हैं।

हुज़ूर अनवर के पूछने पर महोदय ने बताया कि फ्रांस की 66मिलियन में से 5 मिलियन मुसलमान हैं और इस वक़्त फ्रांस में मुसलमानों की 2500 मस्जिदें हैं और ये सब फ्रांस की मुस्लिम कौंसल के अधीन रजिस्टर्ड हैं।

महोदय ने निवेदन किया कि हमें इमामों की ज़रूरत है, हम इमाम ट्रेंड करना चाहते हैं। उनको सिखाना चाहते हैं। यह हमारे लिए मसला बना हुआ है। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया शायद 1926 ई में यहां पैरिस में एक मस्जिद बनी थी। बड़ी मस्जिद थी और यहां की पहली मस्जिद थी। हुज़ूर अनवर ने पूछा आप अपने इमामों को किस तरह ट्रेंड करते हैं

इस पर महोदय ने निवेदन किया कि हमारे पास आठ इंस्टीटियूट हैं जो इमामों को ट्रेंड करते हैं। एक साल में हमें एक सौ 50 इमाम तैय्यार करने होते हैं। हम 15 सौ इमाम चाहिऐं। 2 से 3 सौ और अधिक मस्जिदें की बनाना हमारे प्रॉसॅस में है

हुज़ूर अनवर ने पूछा: आप को मस्जिदें के लिहाज़ से दो हज़ार पाँच सद इमाम चाहिऐं। क्या आप के पास इतने इमाम नहीं हैं। इस पर महोदय ने निवेदन किया हमारे फ़ुल टाइम इमाम नहीं होते। वक़्ती होते हैं। इमाम बनते हैं,कुछ वक़्त काम करते हैं और फिर चले जाते हैं। उनकी ट्रेनिंग भी पूरी नहीं होती। हम ने तीन चार साल पूर्ण ट्रेनिंग का समय रखा हुआ है। इमाम जो आते हैं वे पूरी ट्रेनिंग नहीं करते। पहले ही फ़ारिग़ हो कर चले जाते हैं। सिर्फ कुछ लोग अपनी ट्रेनिंग पूरी करते हैं। अधिकतर तो 2 साल बाद चली जाती है

महोदय ने निवेदन किया कि हम अपनी कमी को पूरा करने के लिए अल्जीरिया , मराक़श और तुर्की से इमाम मंगवाते हैं। उनको हुकूमत की तरफ़ से चार साल का वर्क परमिट मिलता है। फिर वापस जाना पड़ता है।

महोदय ने निवेदन किया कि पैरिस हमला के बाद इस्लामोफोबिया बहुत अधिक हुआ है

इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाए। तो फिर उस के रद्द के लिए आप ने क्या कोशिश की है

इस पर वाइस प्रैज़ीडैंट ने जवाब दिया कि हम कोशिश करते हैं कि उनको बताएं कि इस्लाम का उस से कोई सम्बन्ध नहीं है। इस्लाम दहशतगर्दी के ख़िलाफ़ है। हम उन को इस्लाम की अच्छी शिक्षा बताते हैं।

हुज़ूर अनवर के इस सवाल पर कि आप जिहाद की क्या परिभाषा करते हैं?म-होदय ने निवेदन किया कि सब से पहला जिहाद "जिहाद बिन्नफस" है

इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया। आप इस पर स्थापित रहें और मुसलमानों को भी इसी पर रासिख़ कर दें तो मुसलमानों के ख़िलाफ़ जिहाद का जो ग़लत दृष्टिकोण बना हुआ है वह दूर हो जाएगा

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया आजकल लॉबिंग (Lobbying)का दौर है। आप लॉबिंग करने की कोशिश क्यों नहीं करते। इन लोगों को जिहाद की सही शिक्षा बताएं उन के ज़हन साफ़ हो जाएंगे और इस्लामफोबिया ख़त्म हो जाएगा।

महोदय ने सवाल किया कि अहमदियों का ग़ैर अहमदियों और सुन्नी मुसलमानों के साथ सम्बन्ध कैसा होता है

इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया। इस्लाम में एक दो फ़िरक़े तो नहीं 72 फ़िरक़े हैं और हम मिलाकर 73 बन जाते हैं। हर फ़िर्क़ा एक दूसरे पर इल्ज़ाम लगाता है। पहले सब फ़िरक़े एक हो जाएं और मुत्तहिद हूँ तो एक छाता दुनिया के सामने रख सकते हैं

सन्नी मुसलमानों के साथ जहां तक सम्बन्ध है तो सुन्नी मुसलमानों की अक्स-रीयत हज़रत इमाम इबू हनीफ़हा रहमहुल्लाह के मानने वालों में से है। जमाअत अहमदिया के अक्सर फ़िक़्हही मामले इमाम अबू हनीफ़ा की फ़िक़्ह पर हैं। हम इस बात पर यक़ीन रखते कि आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ख़ातमन्निबय्यीन हैं औरा आप के बाद कोई नई शरीयत नहीं आ सकती। हम इस बात पर यक़ीन रखते हैं कि क़ुरआन करीम आख़िरी शरई किताब है। इस के बाद कोई नई शरीयत आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जो सुन्नत स्थापित फ़रमाई उस के अनुसार हम ने अपनी ज़िन्दगियां गुज़ारनी हैं

हम इस बात पर यक़ीन रखते हैं कि समस्त अहादीस जो आंहज़रत सल्ल्लाहो अलैहि वसल्लम की सुन्नत और क़ुरआन करीम की शिक्षा से टकराती नहीं वे सही हैं और जो टकराती हैं वे ग़लत हैं।

समस्त मुसलमान इस बात पर यक़ीन रखते हैं कि आख़िरी ज़माना में महदी और मसीह ने आना था।हम कहते हैं कि जो मसीह हज़रत मूसविया की शरीयत के अधीन आए थे वह आसमान पर ज़िन्दा नहीं हैं। वह फ़ौत हो गए हैं। 2 हज़ार साल तक कोई शख़्स ज़िन्दा नहीं रह सकता।

जिस मसीह ने इस आख़िरी ज़माना में आना था। किताब सही बुख़ारी की हदीस के आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की उम्मत में से ही आना था। सब मु-सलमानों का यक़ीन है कि मसीह और महदी ने आना है, मसीह आसमान से आना है और फिर महदी अलैहिस्सालम दोनों ने मिल कर काम करना है।हम कहते हैं कि दोनों एक ही शख़्स के नाम हैं और एक ही शख़्स ने आना है। बस मुसलमानों से मतबेद की हमारी यही वजह बनती है। बाक़ी हम खत्म नबुव्वत, आख़िरी नबी, आख़िरी शरीयत सब पर यक़ीन रखते हैं।

इस पर महोदय ने निवेदन किया कि मैं बहुत ख़ुश हूँ। मैं मराकन नस्ल का हूँ। मालकी फ़िर्क़ा से सम्बन्ध है। मालकी,हनफ़ी,शाफ़ई सब मुसलमान हैं

अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के क़ौल के अनुसार जो शख़्स ला इलाह इलल्लह मुहम्मदुर-सूलुल्लाह पढ़ता है वह मुसलमान है हम किसी पर फ़तवा नहीं लगाते। क़ुरआन करीम कहता है कि जो तुम को सलाम कहता है इस की बात सन लो।इ स को यह न कहो कि तुम मोमिन नहीं हो।

आख़िर पर हुज़ूर अनवर ने फ़र्मा का शुक्रिया कि आप यहां मिलने के लिए आए। मुलाक़ात का प्रोग्राम 5 बजे तक जारी रहा। आख़िर पर मेहमान ने तस्वीर बनवाने का सौभाग्य पाया

तीन अहम व्यक्तियों की हुज़ूर अनवर से मुलाक़ात

इसके बाद निम्नलिखित 3 मेहमानों ने हुज़ूर अनवर के साथ मुलाक़ात का सौभाग्य पाया

(1) Valerie Thorin साहिबा महोदया परोटीसटनट जर्नलिस्ट हैं और अफ्रीकन issues पर विशेष पढ़ाई की हुई है। इन का एक Protestant Radioभी है जिस पर एक अहमदी दोस्त Said Adiwi साहिब भी जमाअत

हदीस नबवी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

खड़े होकर नमाज़ पढ़ो और अगर खड़े होकर संभव न होतो बैठ कर और अगर बैठ कर भी संभव न हो तो पहलु के बल लेट कर ही सही।

तालिबे दुआ

Sohail Ahmad Nasir and Family

Jamaat Ahmadiyya Adra,Dist: Puruliya. West Bengal

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2020-2022 Vol. 5 Thursday 2 July 2020 Issue No.27

MANAGER :
NAWAB AHMAD
Tel. : +91- 1872-224757
Mobile : +91-94170-20616
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 500/- Per Issue: Rs. 10/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

के हवाला से प्रोग्राम करते हैं।

(2)Florence Taubmannसाहिबा महोदया Evangelical चर्च की पादरी हैं और Christian - Jewish Friendship Committee की प्रैज़ीडैंट भी हैं।

(3)Alfonssina Bellio साहिबा (महोदया सोशियालोजिस्ट हैं और एक बहुत विशेष Religious Laboratory of Research से सम्बन्धित हैं।

इन सभी ने बारी बारी हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ को अपना परिचय करवाया

Alfonssina Bellio साहिबा ने निवेदन किया कि वह जलसा सालाना फ्रांस में शामिल हुई थीं। यह जलसा में शामिल होना मेरी ज़िन्दगी का एक तारीख़ी मौक़ा था। आप ने ख़िताब भी किया। यह हमारे देश के लिए भी एक तारीख़ी दिन था।

महोदया ने बताया कि वह पेरिस में रहती हैं। लेकिन उन का सम्बन्ध इटली से है। महंगाई के हवाला से बात हुई कि दोनों देशों में से अधिक महंगा कौन है। इस पर इस ने कहा कि रुम में भी महंगाई है लेकिन पेरिस में अधिक है।

Florence Taubmann साहिबा ने बताया कि मैं प्रोटीसटेंट हूँ हमारे चर्च में आधा मिलियन लोग हैं। लोग धर्म से दूर जा रहे हैं

इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया। आजकल की दुनिया में लोगों को धर्म की परवाह नहीं है। एंटर फ़ेथ डायलॉग ज़रूरी है इस में ग़ैर धार्मिक लोगों को बुलाना चाहिए बजाय इसके कि धर्म के ख़िलाफ़ बोलें अपने धर्म की खूबियां वर्णन करें और बताया जाए कि सब को समाज में मिल जल कर रहना चाहिए। हम सब एक ही समाज में रहने वाले हैं

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया: इस वक़्त ज़रूरी है कि समाज में लोगों को ख़ुदा तआला की पहचान करवाएं। इस पर बहुत ज़ोर दें। बुनियादी बात यह है कि प्रत्येक को एहसास हो कि एक ख़ुदा है। प्रत्येक का अपना धर्म है लेकिन एक ख़ुदा को पहचानना यह सबसे बुनियादी बात है।

Valerie Thorin साहिबा ने बताया कि हम एक रेडीयो प्रोग्राम हर 2 हफ़्ता बाद इतवार को करते हैं 4 लाख सुनने वाले हैं। यह धर्म के बारे में होता है। एक ईसाई,एक यहूदी और एक अहमदी को इस्लाम की नुमाइंदगी के लिए रखा है इन का नाम Said Adiwi है

इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया :इस्लाम , मुसलमानों के बारे में लोगों के क्या विचार हैं।

महोदया ने जवाब दिया कि अभी भी लोगों को इस्लाम के बारे में,मुसलमानों के बारे में पता नहीं है। जब से एक अहमदी को रखा है हमारे सुनने वालों की संख्या में इज़ाफ़ा हुआ है। लोगों को वास्तविक इस्लाम का पता चल रहा है। जो भी फीडबैक होती है सकारात्मक होती है।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया बुनियादी बात यह है कि इस्लाम का मतलब ही अमन है।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया। आते हुए काफ़ी ट्रैफ़िक था। सब से बड़ा ट्रैफ़िक जो मैं ने देखा है वे लेगोस नाईजीरिया में था। विशेष नाम Go Slow है। वहां कोई ट्रैफ़िक क़ानूनों की पाबंदी नहीं करता। उन्हों ने इस पर कहा कि वह भी कुछ समय नाईजीरिया में रही हैं। बिलकुल ठीक कहते हैं।

आख़िर पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया 8 साल घाना में रहा हूँ। अफ्रीक़ा को अच्छी तरह जानता हूँ। अफ्रीकन लोगों में घाना के लोग सब से अधिक विनम्र हैं और एक डिसिप्लिन रखते हैं

(शेष.....)

☆ ☆
☆

पृष्ठ 1 का शेष

नमाज़ जो दुआ है और जिसमें अल्लाह को जो ख़ुदा तआला का इस्म आज़म है मुक़द्दम रखा है। ऐसा ही इन्सान का इस्म आज़म इस्तिक़ामत (दृढ़ता) है ।

इस्म आज़म से अभिप्राय यह है कि जिस माध्यम से इन्सानियत के कमालात प्राप्त हों। अल्लाह तआला ने اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ में इस की तरफ़ ही इशारा फ़रमाया है और एक दूसरे स्थान पर फ़र्माया اَلَّذِيْنَ قَالُوْا رَبُّنَا اللّٰهُ ثُمَّ اسْتَقَامُوْا تَتَنَزَّلُ عَلَيْهِمُ الْمَلٰٓئِكَةُ اَلَّا تَخَافُوْا وَلَا تَحْزَنُوْا (हाम मीम अस्सजद :31) अर्थात जो लोग अल्लाह तआला की रबूबियत के नीचे आ गए और इस के इस्मे आज़म इस्तिक़ामत के नीचे जब इन्सानियत की बीज रखा गया। फिर इस में इस किस्म के सामर्थ्य पैदा हो जाते हैं कि फिरश्तों का नुज़ूल इस पर होता है और किसी किस्म का भय तथा डर उनको नहीं रहता। मैंने कहा है कि इस्तिक़ामत बड़ी चीज़ है। इस्तिक़ामत से क्या अभिप्राय है? प्रत्येक चीज़ जब अपने ठाक स्थान और अवसर पर हो वह हिक्मत और इस्तिक़ामत से ताबीर पाती है। जैसे दूरबीन के हिस्सों को अगर अलग अलग कर के उनको असल स्थानों से हटा कर दूसरे स्थान पर रख दें वह काम न देगी। अत: وَضْعُ الشَّيْءِ فِيْ مَحَلِّهٖ का नाम इस्तिक़ामत है या दूसरे शब्दों में यह कहो कि हैयत तिब्बी का नाम इस्तिक़ामत है। अत: जब तक इन्सानी बनावट को ठीक उसी हालत पर न रहने दें और उसे सीधी हालत में न रखें वह अपने अन्दर कमाल पैदा नहीं कर सकती। दुआ का तरीक़ यही है कि दोनों इस्मे आज़म जमा हों। और यह ख़ुदा की तरफ़ जाए किसी ग़ैर की तरफ़ लौटे न चाहे वह उस की इच्छाओं ही का बुत क्यों न हो। जब यह अवस्था हो जाएगी तो उस वक़्त اُدْعُوْنِيْٓ اَسْتَجِبْ لَكُمْ (अल-मोमिन :61) का मज़ा आ जाता है। अत: मैं चाहता हूँ कि आप इस्तिक़ामत को प्राप्त करने के लिए कोशिश करें और चेष्ठा से उसे पाएं क्योंकि वह इन्सान को ऐसी हालत पर पहुंचा देती है जहां उस की दुआ क़बूलीयत का सम्मान प्राप्त करती है। इस वक़्त बहुत से लोग दुनिया में मौजूद हैं जो दुआ के कबूल न होने की शिकायत करने हैं । लेकिन मैं कहता हूँ कि अफ़सोस तो यह है कि जब तक वह इस्तिक़ामत पैदा न करें दुआ की क़बूलीयत का आनन्द को क्योंकर पा सकेंगे। क़ुबूलियत दुआ के निशान हम इसी दुनिया में पाते हैं। इस्तिक़ामत के बाद इन्सानी दिल पर एक ठण्डक और सन्तोष के निशान पाए जाते हैं। किसी किस्म की बज़ाहिर नाकामी और असफलता पर भी दिल नहीं जलता लेकिन दुआ की हक़ीक़त से अज्ञान रहने की अवस्था में ज़रा ज़रा सी असफलता भी जहन्नुम की आग की एक लिपट हो कर दिल पर छा जाती है और घबरा घबरा कर बेक़रार किए देती है। इसी की तरफ़ ही इशारा है। نَارُ اللّٰهِ الْمُوْقَدَةُ الَّتِيْ تَطَّلِعُ عَلَى الْاَفْـِٕدَةِ (अल-हुमज़ :7,8)

(मल्फ़ूज़ात भाग 1 पृष्ठ 152 से 155 प्रकाशन 2008 कादियान)

☆ ☆

दुआ का अभिलाषी
जी.एम. मुहम्मद शरीफ़
जमाअत अहमदिया मरकरा (कर्नाटक)

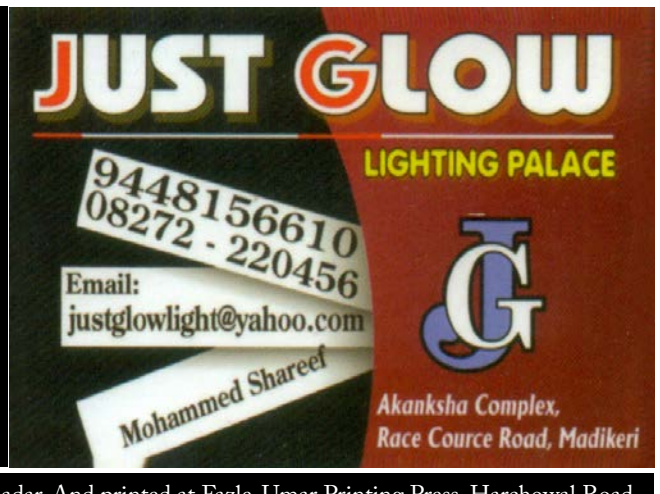

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad